bdkb 10 lkekftd xfr'khyrk dh l dYiuk,¡ vkj :i

bdkb dh :ij[kk

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 गतिशीलता के प्रकार और रूप

- 10.2.1 समस्तर गतिशीलता
- 10.2.2 ऊर्ध्व गतिशीलता
- 10.2.3 गतिशीलता के रूप

10.3 गतिशीलता के आयाम और तात्पर्य

- 10.3.1 परिवर्तित पारस्परिक गतिशीलता और अंतःपारंपरिक गतिशीलता
- 10.3.2 गतिशीलता के क्षेत्र
- 10.3.3 नीचे की तरफ गतिशीलता
- 10.3.4 ऊपर की तरफ गतिशीलता
- 10.3.5 गतिशीलता की संभावनाएँ
- 10.3.6 तुलनात्मक सामाजिक गतिशीलताएँ

10.4 सामाजिक गतिशीलता का आधुनिक विश्लेषण

- 10.4.1 औद्योगीकरण का लचीला सिद्धांत
- 10.4.2 लिपसेट और जैटरबर्गर का सिद्धांत
- 10.4.3 लिपसेट और जैटरबर्ग के सिद्धांत की पुनर्स्थापना
- 10.4.4 सामाजिक गतिशीलता के अध्ययन की समस्याएँ

10.5 सारांश

10.6 शब्दावली

10.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

10-0 mís';

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- गतिशीलता के विभिन्न प्रकार और रूप जान सकेंगे;
- गतिशीलता के मुख्य आयाम और उनका तात्पर्य समझ सकेंगे; और
- गतिशीलता के आधुनिक विश्लेषण की रूपरेखा की चर्चा कर सकेंगे।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

10-1 çLrkouk

सामाजिक गतिशीलता का अर्थ है कि व्यक्तियों का किसी एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति में संचलन। सामाजिक स्थितियों में परिवर्तन का अभिप्राय प्रायः जीवन यापन और जीवन–शैली में होने वाले महत्वपूर्ण बदलावों से है। सामाजिक गतिशीलता की संकल्पना की आदर्श परिभाषा पिटरीम ए. सोरोकिन द्वारा दी गई है। सोरोकिन के अनुसार सामाजिक स्थितियों में परिवर्तन एक व्यक्ति, सामाजिक उद्देश्य या सामाजिक मूल्यों में होने वाले परिवर्तनों द्वारा समझा जा सकता है। कहने का अभिप्राय यह है कि कोई भी वस्तु जिसे मनुष्य ने बनाया या परिवर्तित किया है, सामाजिक गतिशीलता का अनुभव कराती है।

समाजशास्त्र में एक संकल्पना के रूप में सामाजिक गतिशीलता का महत्व एकदम स्पष्ट है। किसी व्यक्ति अथवा समूह द्वारा समाज की स्थिति में अनुभव किया गया कोई परिवर्तन न केवल उस व्यक्ति या समूह पर प्रभाव डालता है बल्कि संपूर्ण समाज पर भी उसका प्रभाव पड़ता है।

सामाजिक गतिशीलता की संकल्पना की व्याख्या परोक्ष रूप से समाज में वर्गीकरण की पहचान कराती है। यह वर्गीकरण सामान्यतः शक्तिं, हैसियत और विशेषाधिकार के संदर्भ में किया जाता है। इससे किसी समाज में किसी व्यक्ति या समूह द्वारा शक्ति, हैसियत और विशेषाधिकारों को प्राप्त करने या खोने की समाजशास्त्रीय जाँच की संभावनाओं का मार्ग खुल जाता है। अन्य शब्दों में, अधिकारी–वर्ग की सीमा रेखा से किसी के ऊपर जानें या नीचे आने से सामाजिक स्थिति अर्थात् सामाजिक गतिशीलता का पता लगता है।

सामाजिक स्थिति पर प्रभाव डालने में लगने वाला समय अलग–अलग समाज में अलग अलग होता है। सामाजिक गतिशीलता के अनेक आयाम हैं। सामाजिक गतिशीलता का समाजशास्त्र ऐसे विद्वानों के योगदानों से भरपूर है जिन्होंने अपने संबंधित अध्ययन क्षेत्रों और एकत्रित आँकड़ों के आधार पर इस संकल्पना के बारे में सिद्धांत प्रतिपादित किए हैं।

यह एकदम स्पष्ट है कि किसी स्थिति में परिवर्तन या तो सम–स्तरीय या फिर सोपानात्मक हो सकता है। अतः सामाजिक स्थिति में परिवर्तन को दो आरंभिक प्रकारों अर्थात् सम–स्तर गतिशीलता और ऊर्ध्व गतिशीलता के विश्लेषणात्मक रूप में समझा जा सकता है।

10-2 xfr'khyrk ds çdkj vkj :i

अब हम सामाजिक गतिशीलता के प्रकारों और रूपों का वर्णन करेंगे।

10-2-1 leLrj xfr'khyrk

सम–स्तरीय सामाजिक गतिशीलता का अर्थ है– किन्हीं व्यक्तियों या समूहों द्वारा किसी समाज में एक स्थिति से ऐसी दूसरी स्थिति में जाना जो स्तर में उच्च या निम्न न हो। सोरोकिन के अनुसार, सम–स्तर सामाजिक गतिशीलता का अर्थ है किसी एक सामाजिक समूह से किसी व्यक्ति या समूह का समान स्तर वाले किसी अन्य समूह में जाना। अमेरिकी समाज के संदर्भ में बैपटिस्ट धार्मिक समूह से मैथोडिस्ट धार्मिक समूह

में व्यक्तियों का गमन एक नागरिकता से दूसरी नागरिकता, तलाक या पुनर्विवाह के द्वारा एक परिवार से दूसरे परिवार (पति या पत्नी के रूप में) एक कारखाने से उसी व्यावसायिक स्तर पर दूसरे कारखाने में जाना आदि सभी सम–स्तर सामाजिक गतिशीलता के उदाहरण हैं।

चूँकि सम–स्तर गतिशीलता में बड़े क्रमिक सोपानात्मक उतार–चढ़ाव नहीं होते। अतः सामाजिक गतिशीलता का सम–स्तरीय आयाम किसी समाज में स्थित स्तरीकरण की स्थिति पर अधिक प्रकाश नहीं डाल सकता। फिर भी यह समाज में स्थित विभाजन की प्रकृति का संकेत तो कर ही देता है। ऐसे विभाजन समाज में स्थिति के बड़े अंतर का आरंभिक संकेत नहीं देते। अधिक समकालीन समाजशास्त्री एंटोनी गिड्डन का विचार है कि आधुनिक सभ्यताओं में गतिशीलता की अनेक उप–दिशाएँ हैं। वह समस्तर गतिशीलता को ऐसी पार्श्व गतिशीलता के रूप में परिभाषित करता है जिसमें पड़ोसी नगरों या क्षेत्रों के बीच भौगोलिक संचलन शामिल हों।

10-2-2 Å/oZ xfr'khyrk

समाजशास्त्र के साहित्य में ऊर्ध्व गतिशीलता पर अत्यधिक ध्यान दिया गया है। यह साधारणतः किसी व्यक्ति या समूह के स्तर में ऊपर या नीचे की तरफ होने वाले परिवर्तन पर है। ऊर्ध्व गतिशील के अनेक उदाहरण हैं। उन्नति या अवनति, आमदनी में परिवर्तन, किसी ऊँची या नीची हैसियत वाले व्यक्ति से शादी तथा किसी अच्छे या बुरे पड़ोस में गमन आदि सभी ऊर्ध्व गतिशीलता के उदाहरण हैं। ऊर्ध्व गतिशीलता में ऐसा संचलन अवश्य . शामिल होता है जो स्तर में वृद्धि या कमी सुनिश्चित करता हो। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि कुछ संचलन एक ही समय में समस्तर तथा ऊर्ध्व दोनों ही हो सकते हैं।

पी.सोरोकिन ऊर्ध्व सामाजिक गतिशीलता को बेहतर ढंग से इस प्रकार परिभाषित करता है कि इसमें किसी व्यक्ति (या सामाजिक वस्तु) का एक सामाजिक स्तर से दूसरे सामाजिक स्तर में संचलन हो। संचलन की दिशाओं के अनुसार दो प्रकार की सामाजिक गतिशीलताएँ होती हैं–(1) ऊपर की तरफ; तथा (2) नीचे की तरफ या क्रमशः 'सामाजिक उत्थान' और 'सामाजिक पतन'।

एंटोनी गिड्डन ऊर्ध्व गतिशीलता को ऊपर या नीचे की तरफ सामाजिक आर्थिक मानदंड संचलन के रूप में परिभाषित करता है। उसके अनुसार जो सम्पत्ति, आमदनी या हैसियत प्राप्त करते हैं वे ऊपर की तरफ गतिशील माने जाते हैं तथा जो इसके विपरीत संचलन करते हैं वे नीचे की तरफ गतिशील माने जाते हैं।

गिड्डन के अनुसार आधुनिक सभ्यताओं में ऊर्ध्व तथा समस्तर (पार्श्व) गतिशीलता प्रायः एक–साथ होती है। प्रायः एक गतिशीलता से दूसरी गतिशीलता पैदा होती है। उदाहरण के लिए किसी शहर में एक कंपनी में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी अन्य शहर या देश में स्थित उस कंपनी की शाखा में पदोन्नति प्राप्त कर सकता है।

10-2-3 xfr'khyrk d% :i

विश्लेषण के रूप में किसी व्यक्ति या समूह द्वारा अनुभूत सामाजिक स्थिति के परिवर्तन का कोई व्यक्ति विभिन्न तरीकों या रूपों में संकल्पनात्मक विवेचन कर सकता है।

अमरीकी समाज के साक्ष्य देकर पी.सोरोकिन कहता है कि ऊपर तथा नीचे की तरफ आर्थिक, राजनीतिक तथा व्यावसायिक गतिशीलता दो मुख्य रूपों में निहित है। ये हैं–

1) निचले स्तर के व्यक्तियों का विद्यमान उच्च स्तर में प्रवेश करना।

2) ऐसे व्यक्तियों द्वारा एक नए समूह की स्थापना। यह समूह इसी प्रकार के विद्यमान अन्य समूहों के साथ मिलने की अपेक्षा एक उच्चतर समूह में सम्मिलित हो जाता है।

इसी प्रकार, नीचे या उतार वाली गतिशीलता के भी दो मुख्य रूप हैं

1) व्यक्तियों का विद्यमान उच्च सामाजिक स्थिति से बिना किसी अपकर्ष या संबंधित उच्च समूह के विघटन के विद्यमान निचली सामाजिक स्थिति में जाना; और

2) अन्य समूहों में किसी समूह की स्थिति की अवनति होने के कारण या एक सामाजिक इकाई के विघटन के कारण किसी संपूर्ण सामाजिक समूह की स्थिति का पतन होना।

गतिशीलता के रूपों या प्रकारों के संबंध में नवीनतम कार्य रालफ एच.टर्नर द्वारा किया गया है। ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में गतिशीलता के प्रधान प्रकारों के विपरीत टर्नर ने उच्च गतिशीलता के दो आदर्श विशिष्ट नमूनों का सुझाव दिया है। ये हैं–

1½ çfr;kxkRed xfr'khyrk % यह एक व्यवस्था है जिसमें खुली प्रतियोगिता में श्रेष्ठ स्थिति एक पुरस्कार होती है जिसे महत्वाकांक्षी लोगों द्वारा कोशिश करके प्राप्त किया जाता है। 'इलीट' शब्द का प्रयोग टर्नर द्वारा सरल अर्थ में किया गया है जिसका अर्थ है– उच्च श्रेणी वर्ग (कुलीन)। 'प्रतियोगिता' में सही खेल के कुछ नियम लागू होते हैं। उम्मीदवार अपनी पसंद की नीतियाँ अपना सकते हैं। चूँकि सफल उच्च गतिशीलता का पुरस्कार देना किसी उच्च वर्ग के हाथ में नहीं होता, अतः यह कोई निर्णय नहीं कर सकता कि कौन इस पुरस्कार को प्राप्त करेगा और कौन नहीं।

2½ çk;kftr çfr;kfxrk % इसमें स्थापित उच्च वर्ग या उनके एजेंट व्यक्तियों को अपने समूह में नियुक्त करते हैं। इस स्थिति में बनाई गई उच्च श्रेणी की श्रेष्ठता कुछ मानदंडों के आधार पर दी जाती है, जिसे किसी प्रकार के प्रयत्नों या नीति से प्राप्त नहीं किया जा सकता। उच्च गतिशीलता किसी निजी क्लब में प्रवेश पाने की तरह है जहाँ प्रत्येक उम्मीदवार एक या अनेक सदस्यों द्वारा प्रायोजित किया जाता है। अंत में, उसके सदस्य उच्च गतिशीलता प्रदान करने या प्रदान न करने का निर्णय इस आधार पर करते. हैं कि उस व्यक्ति में उनके साथी सदस्यों में पाए जाने वाले गुण हैं या नहीं।

जब तक किसी समाज में सामाजिक स्थितियों का श्रेणीकरण है तब तक एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति में संचलन की कम से कम सैद्धांतिक संकल्पना की संभावना होती है। ये परिवर्तन किसी व्यक्ति, समूह या यहाँ तक किसी सामाजिक मूल्य/वस्तु द्वारा किएध्महसूस किए जाते हैं। सामाजिक स्थिति के ऐसे परिवर्तनों को सामाजिक गतिशीलता कहा जाता है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

vH;kl 1

जिन लोगों को आप जानते हैं उनमें समस्तर गतिशीलता तथा ऊर्ध्व गतिशीलता के उदाहरण खोजिए। परिणामों को अपनी नोटबुक में लिखिए और फिर अपने अध्ययन केंद्र में अन्य विद्यार्थियों के साथ चर्चा कीजिए।

यह परिवर्तन यदि नवीनतम रूप में महसूस किया जाता है तो इसे समस्तर सामाजिक गतिशीलता कहा जाता है। यदि संचलन सोपानात्मक हो तो उसे ऊर्ध्व गतिशीलता कहा जाएगा। समाजशास्त्र में सोपानात्मक गतिशीलता जो ऊपर की तरफ या नीचे की तरफ होती हुई विभिन्न पहलुओं पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

सामाजिक गतिशीलता के विभिन्न रूपों का विश्लेषण भी किया जा सकता है। कुछ महत्वपूर्ण रूप हैं– प्रतियोगी गतिशीलता और प्रायोजित गतिशीलता। प्रतियोगी गतिशीलता व्यक्ति या समूह अपने प्रयत्नों और उपलब्धियों द्वारा अपनाता है। जबकि प्रायोजित गतिशीलता में अवनत वर्ग के संघर्ष और प्रयत्नों के स्थान पर यह पहले से स्थापित उच्च सामाजिक समूहों या सरकार/समाज द्वारा कुछ मुख्य मानदंडों के आधार स्वीकृत या प्रदान किए जाते हैं।

cks/k iz'u 1

1) प्रतियोगितात्मक गतिशीलता की संकल्पना का पाँच वाक्यों में संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रायोजित प्रतियोगिता की विचारधारा का पाँच वाक्यों में संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

10-3 xfr'khyrk dk vk;ke vkj rkRi;

सामाजिक गतिशीलता की संकल्पना का विश्लेषण करने और इसके विभिन्न रूपों का अध्ययन करने के लिए हमें इसके विभिन्न आयामों की चर्चा करनी होगी। इसके पश्चात् इन आयामों का किसी समाज के बुनियादी रूप के साथ मिलान किया जाना अपेक्षित है। इस भाग में हम सामाजिक गतिशीलता के महत्वपूर्ण आयामों का पता

लगाएँगे तथा व्यापक सामाजिक संरचना के परिप्रेक्ष्य में उनके तात्पर्य की भी बात करेंगे।

10-3-1 ifjofrr ikjLifjd xfr'khyrk vkj vr%ikjifjd xfr'khyrk

सामाजिक गतिशीलता के अध्ययन के दो तरीके हैं। एक तो कोई भी व्यक्ति इस बात का अध्ययन कर सकता है कि एक व्यक्ति अपने कार्य जीवन के दौरान अपने व्यवसाय में सामाजिक मानदंड के अनुसार कितना ऊपर या नीचे जाता है। इसे प्रायः परिवर्तित पारंपरिक गतिशीलता कहा जाता है।

विकल्प के रूप में विश्लेषण किया जा सकता है कि बच्चे अपने पिता या दादा की तरह उसी प्रकार के कार्य में कहाँ तक जाते हैं। पीढ़ी के बाद गतिशीलता को अंतःपारंपरिक गतिशीलता कहा जाता है।

दूसरे शब्दों में, किसी व्यक्ति के जीवन–काल में परिवर्तनों के किसी एक बिंदु से किया गया अध्ययन परिवर्तित पारंपरिक गतिशीलता के अध्ययन का विषय है। यदि अध्ययन दो या तीन पीढ़ी के बाद परिवार में हुए परिवर्तनों के किसी एक बिंदु से किया जाए तो यह अंतःपारंपरिक गतिशीलता का विषय है।

परिवर्तित पारंपरिक गतिशीलता को प्रमुख रूप से व्यावसायिक गतिशीलता के रूप में भी जाना जाता है। व्यावसायिक गतिशीलता के बारे में जानकारी लेने के लिए लोगों से अपने जीवन में किए गए कार्यों के बारे में पूछा जाता है।

अमेरिकी व्यावसायिका संरचना का अध्ययन करते समय लो और उंकन (1975) ने पाया कि किसी व्यक्ति का अपने कार्य की सोपान पर ऊपर चढ़ने में निम्नलिखित बातों का बहुत प्रभाव पड़ता है–

1) शिक्षा की मात्रा
2) व्यक्ति के प्रथम कार्य की स्थिति; और
3) पिता का व्यवसाय।

ब्लो और डंकन की गतिशीलता के मॉडल का चित्रांकन इस प्रकार किया जा सकता है–

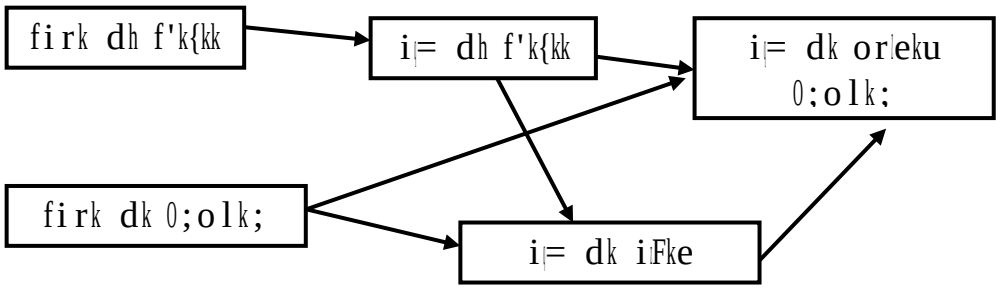

इस उदाहरण में प्रभाव की दिशा तीर द्वारा तथा प्रभावों का महत्व तीर बनाने वाली पंक्तियों की बढ़ती संख्या द्वारा दर्शाया गया है।

व्यावसायिकता को अपनाने में कुछ परोक्ष तथ्य भी भूमिका निभाते हैं। छोटे परिवार प्रत्येक बच्चे को अधिक संसाधन, ध्यान तथा प्रेरणा प्रदान कर सकते हैं। शीघ्र विवाह करने वालों की अपेक्षा विलंब से विवाह करने वालों के सफल होने की अधिक संभावना है। विलंब से विवाह करने की स्वीकृति एक दबे हुए व्यक्तित्व की विशेषता का संकेत हो सकती है, आदि।

जीविका–संबंधी गतिशीलता या परिवर्तित पारंपरिक गतिशीलता का अध्ययन जिसमें कार्य जीवन के दौरानं व्यक्ति के परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है अपेक्षाकृत छोटी अवधि को शामिल करता है तथा वंश परंपरा को उस वर्ग ने कैसे अपनाया इसपर अधिक प्रकाश नहीं डालता। इस तरह के अध्ययन से इस प्रकार के समाज पर भी अधिक रोशनी नहीं पड़ती। कोई समाज किस सीमा तक मुक्त या बंद है, इसका निर्णय करने के लिए अभिभावकों तथा बच्चों में अपने व्यवसाय के एक जैसे बिंदुओं पर या समान आयु में तुलना करना हमेशा सही होता है। इस प्रकार, समाजशास्त्रीय अनुसंधान में अंतःपारंपरिक गतिशीलता अधिक उपयोगी है।

10-3-2 xfr'khyrk dh lhek

जब व्यक्ति सामाजिक पैमाने से ऊपर या नीचे की ओर जाते हैं तो वे एक या अनेक स्तरों से गुजर सकते हैं। इस प्रकार तय की गई सामाजिक सीमा को रेंज (सीमा) का नाम दिया गया है। इस तरह के संचलन में सीमित सामाजिक सीमा अर्थात् कम दूरी तक परिवर्तन हो सकता है। इसी प्रकार, अनेक स्तरों (ऊपर या नीचे) की थोड़ी बड़ी सामाजिक दूरी भी संभव हो सकती है। उदाहरण के लिए, जब ब्लो और डंकन ने राष्ट्रीय स्तर पर 20,000 पुरुषों के नमूने से सूचना एकत्रित की तो पाया कि अमेरिका में अधिक सोपानात्मक गतिशीलता है।

यह जानना रुचिकर होगा कि लगभग सभी एक–दूसरे के निकट व्यावसायिक स्थितियों के बीच हैं। अधिक सीमा वाली (लाँग रेंज) गतिशीलता न के बराबर है। इसके विपरीत, फ्रेंक पार्किन ने अपने अध्ययन (1963) में हंगरी में पूर्व–साम्यवादी शासन में अधिक सीमा वाली (लाँग रेंज) गतिशीलता के अधिक उदाहरण देखे।

10-3-3 uhps dh rjQ xfr'khyrk

एंटोनी गिड्डन का मानना है कि नीचे की तरफ गतिशीलता ऊपर की तरफ वाली गतिशीलता से कम प्रचलित है, तो भी यह सर्वव्यापक है। उसके निष्कर्षों के अनुसार, इंगलैंड में 20 प्रतिशत से अधिक व्यक्ति नीचे की तरफ अंतःपारंपरिक रूप से गतिशील हैं। लेकिन अधिकांश गतिशीलता सीमित है। नीचे की तरफ परिवर्तित गतिशीलता भी आम है।

.यह प्रवृत्ति प्रायः मनोवज्ञानिक समस्याओं और चिंताओं से जुड़ी है जहाँ व्यक्ति अपनी आदतन जीवन–शैली को बनाए रखने में असफल हो गया। नीचे की तरफ गतिशीलता अत्यधिकता के कारण भी हो सकती है। उदाहरण के तौर पर, अधेड़ अवस्था के वे व्यक्ति जिनका कार्य छूट जाता है, उन्हें दूसरा रोजगार नहीं मिल पाता। अतः वे पहले से कम आमदनी वाला कार्य करने लगते हैं।

किसी भी प्रकार की परिवर्तित गतिशीलता के संदर्भो में नीचे की तरफ गतिशीलता में अधिकांशतः महिलाएँ होती हैं। ऐसा इसलिए है कि अधिकांश महिलाएँ अपना अभीष्ट

व्यवसाय प्रसव के समय छोड़ देती हैं। परिवार का पालन करने के कुछ वर्षों बाद विलंब से वे वेतनभोगी कार्य करने लगती हैं, जो प्रायः पहले से कम आमदनी वाला होता है।

10-3-4 Åij dh rjQ xfr'khyrk

आधुनिक समाजों में धन और सम्पत्ति प्राप्त करना उत्कर्ष के लिए मुख्य साधन है। लेकिन कुछ अन्य माध्यम भी हैं। सम्मानजनक कार्य (जैसे, न्यायाधीश आदि) करना, डॉक्टर की उपाधि प्राप्त करना, या फिर वैभवशाली परिवार में विवाह करना ऐसे ही कुछ माध्यम हैं।

प्रायः यह माना जाता है कि परिवार एक सामाजिक इकाई है जिसके माध्यम से व्यक्ति को सामाजिक वर्ग संरचना में रखा जाता है। परिवार के माध्यम से बच्चा गैर–औद्योगिक समाजों में ये चीजें व्यक्ति की सामाजिक संरचनात्मक स्थिति का पता लगाने के लिए बड़ी प्रक्रिया का निर्माण कर सकती है। औद्योगिक समाजों में वंशानुगत प्रक्रिया संबंधों के द्वारा लगभग उसी सीमा तक वही सामाजिक स्थिति संप्रेषण की गारंटी नहीं लेती। लेकिन तब भी यह समाज की इस महत्वपूर्ण प्रक्रिया को समाप्त नहीं करती। यहाँ पर यह जानना महत्वपूर्ण है कि उच्च समान शैली और व्यवहार का अनुकरण (बहुत बार समय अपरिष्कृत या भिन्न होता है) पारंपरिक तथा आधुनिक समाजों में भी ऊपर की तरफ गतिशीलता के उपयोगी साधनों के रूप में कार्य करता है।

10-3-5 xfr'khyrk dh lHkkouk,¡

सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन अनिवार्य रूप से समाज के खुलेपन और संकीर्णता के प्रश्न पैदा करता है। यदि किसी समाज की श्रेणीकृत संरचना में किसी संचलन की अनुमति नहीं है तो उसमें गतिशीलता संभव नहीं है। दूसरी तरफ, जो समाज लचीला होता है उसमें गतिशीलता आसानी से हो जाती है।

संकीर्ण समाज में ऊर्ध्व गतिशीलता न के बराबर संभव है। कोलम्बिया और भारत में आधुनिकता से पूर्व कमोबेश समाज इसी प्रकार के थे। इसके विपरीत, एक मुक्त समाज में अधिक ऊर्ध्व सामाजिक गतिशीलता होती है। फिर भी, खुले समाज में लोग एक स्तर से दूसरे स्तर में बिना प्रतिरोध के नहीं जा सकते। प्रत्येक समाज में एक स्थापित मानदंड होता है। यह मानदंड उपयुक्त शिष्टाचार परिवार का श्रेणी में स्थान, शिक्षा या जातीय संबंध आदि के रूप में हो सकता है, जिसे उच्च सामाजिक स्तर में जाने से पूर्व लोगों द्वारा पूरा करना होता है।

अधिकांश मुक्त समाजों में उच्च औद्योगीकरण की प्रवृत्ति होती है। ज्यों–ज्यों समाज औद्योगिक होता जाता है नए शिल्प और व्यवसाय आवश्यक हो जाते हैं। इस कारण पीछे वाले कार्य अनावश्यक हो जाते हैं। नए व्यवसायों का अर्थ है–अधिक वर्ग के लोगों के लिए गतिशीलता के अधिक अवसर। इसके अतिरिक्त, शहरीकरण से ऊर्ध्व गतिशीलता में वृद्धि होती है क्योंकि आरोपित मानदंड शहर के पहचान–रहित वातावरण में कम महत्वपूर्ण हो जाते हैं। लोग उपलब्धिपरक, प्रतिस्पर्धात्मक तथा अच्छी स्थिति के लिए प्रयास करते हैं। औद्योगिक समाजों में सरकार भी कल्याणकारी कार्यक्रम चलाती है जिससे गतिशीलता को बढ़ावा मिलता है।

वास्तव में गतिशीलता से व्यावसायिक ढाँचे में परिवर्तन, मध्य और उच्च वर्ग के व्यवसायों की श्रेणी और अनुपात में वृद्धि तथा निचली श्रेणी के व्यवसायों में कमी हो जाती है। समाज के व्यावसायिक ढाँचे में परिवर्तन से उत्पन्न गतिशीलता को संरचनात्मक गतिशीलता (कभी कभी आरोपित गतिशीलता भी) कहा जाता है।

c,Dl 10-01

यह बताना महत्वपूर्ण है कि आधुनिक समाज में कृषक समाज, औद्योगिक समाज से भी आगे चला गया है। आधुनिक औद्योगिक देशों ने अपने प्रमुख उत्पादन कार्यों से परे अर्थव्यवस्था की तीसरी शाखा अर्थात् व्यवसाय, परिवहन, संचार और वैयक्तिक तथा व्यावसायिक सेवाएँ विकसित कर ली हैं। कहने का अभिप्राय है कि आधुनिक औद्योगिक समाज में समग्रतः सेवा–क्षेत्र प्रमुख रूप से है। ऐसी भविष्यवाणी डेनियन बेल द्वारा लगभग तीन दशक पहले ही की जा चुकी थी। कृषि–रोजगार आनुपातिक तथा संपूर्ण रूप से कम रहा था जबकि उत्पादन–रोजगार आनुपातिक रूप से कम हो रहा था। इस परिवर्तन से अभिजात वर्ग तथा मध्यवर्गीय व्यवसायों में वृद्धि हो गई। ये विकास वैयक्तिक प्रयत्नों की अपेक्षा मुख्यतः सामाजिक गतिशीलता के कारण हुआ।

अनेक विद्वानों ने पता लगाया कि औद्योगीकरण के पूँजीवाद से व्यापक रूप से नीचे की तरफ गतिशीलता हुई। सफेदपोश व्यवसायों ने ऊपर की तरफ गतिशीलता के अधिकांश जनसंख्या को पर्याप्त अनुकूलता प्रदान नहीं की। मार्क्सवादी सिद्धांत ने विद्वानों को यह दर्शाने के लिए प्रेरित किया कि बाद के पूँजीवाद की विवशताओं के कारण श्रम के उत्कर्ष की अपेक्षा क्रमिक रूप से उसका पता हुआ। इसके परिणामस्वरूप अत्यधिक मात्रा में सभी प्रकार की नीचे की तरफ गतिशीलता हुई।

10-3-6 r|yukRed lkekftd xfr'khyrk,¡

एक बार सामाजिक गतिशीलता की संकल्पना स्पष्ट होने के बाद हम इसके सैद्धांतिक तात्पर्य के बारे में जान गए हैं।

अतः सामाजिक गतिशीलता के वास्तविक अनुभव–जन्य अध्ययनों पर ध्यान देना उपयोगी होगा। इन अध्ययनों के निष्कर्ष एवं अनुमान जिनमें विभिन्न समाजों को शामिल किया गया है, वास्तविक रूप से निर्धारित सामाजिक स्थिति को सामाजिक गतिशीलता की संकल्पना और रूपों के साथ संबंध स्थापित करने में हमारे लिए सहायक होंगे। हम सर्वाधिक प्रतिनिधित्व वाले अध्ययन कर सकते हैं।

c,Dl 10-02

वास्तव में सोरोकिन के अध्ययन के माध्यम से मुख्यतः यह विश्वास किया जाता था कि अमेरिका में किसी भी यूरोपीय देश की अपेक्षा गतिशीलता के अधिक अवसर हैं। यूरोपीय महाद्वीप के अनेक उदाहरणों के द्वारा सिमौर लिपसेट तथा रियनहार्ड बैंडिक्स (1959) ने दर्शाया कि किसी भी औद्योगिक देश में कोई अंतर नहीं है। उन्होंने अपने आँकड़ों को अनेक औद्योगिक समाजों के हस्तचालित और मशीनी क्षेत्रों में विभाजित किया।

गिर्हार्ड लेंस्की (1965) ने विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर हस्तचालित और मशीनी कार्य की एक निर्देशिका तैयार की। उसके अध्ययन ने दर्शाया कि पहले

स्थान पर अमेरिका में गतिशीलता की दर 34 प्रतिशत है, लेकिन पाँच यूरोपीय देश लगभग उसके नजदीक हैं। ये ह–स्वीडन (32 प्रतिशत), इंगलैंड (31 प्रतिशत), डेनमार्क (30 प्रतिशत), नार्वे (30 प्रतिशत) तथा फ्रांस (29 प्रतिशत)। अतः हम देख सकते हैं कि औद्योगिक देशों में गतिशीलता दर एक–जैसा है।

फ्रैंक पार्किन ने सामाजिक गतिशीलता की नई ऊँचाइयों वाला अभी तक का एक उपयुक्त एवं सारगर्भित अध्ययन किया। उसने पूर्वी यूरोप के प्राचीन साम्यवादी समाज के आँकड़े एकत्रित कर एक तुलना प्रस्तुत की।

1) पूँजीवादी समाजों की तरह प्रभुत्व वाला प्रबंधक तथा व्यावसायिक वर्ग अपने बच्चों के लिए अपेक्षाकृत अधिक लाभ पहुंचाते हैं; और

2) विशेषाधिकार–प्राप्त वर्ग अपने बच्चों के लिए उच्च स्थिति सुनिश्चित करते हैं। फिर भी इन समाजों में किसानों एवं हाथ से काम करने वाले श्रमिकों के लिए अधिक गतिशीलता है।

पार्किन ने हंगरी में एक अध्ययन के उदाहरण द्वारा सिद्ध किया कि 77 प्रतिशत प्रबंधक, प्रशासनिक तथा व्यावसायिक स्थिति वाले पुरुष और महिलाएँ किसान तथा मूलतः श्रमिक वर्ग के थे और 53 प्रतिशत चिकित्सक, वैज्ञानिक, तथा इंजीनियर भी ऐसे ही परिवारों से संबंधित थे।

औद्योगिक विस्तार से पूर्वी यूरोप में सफेदपोश स्थितियों में वृद्धि होने के कारण निचले स्तर में गतिशीलता प्रदान की जो अमेरिका और यूरोप से भी अधिक थी। इस तथ्य ने श्रमिक वर्गों में प्रेरणा भर दी।

ये अध्ययन बताते हैं कि सामाजिक गतिशीलता उसकी संभावनाएँ और तात्पर्य सभी विशिष्ट सामाजिक संदर्भो से जुड़े हुए हैं। अगले भाग में हम सामाजिक गतिशीलता के और अधिक नवीन अध्ययनों को देखेंगे जो अनुसंधान की सूक्ष्म तकनीकों का प्रयोग कर सामाजिक गतिशीलता की संकल्पना के व्यापक सिद्धांतों के आधार पर किए गए हैं।

सामाजिक गतिशीलता के किसी भी अध्ययन के अनेक आयाम होते हैं। यदि किसी व्यक्ति के जीवन काल में उसकी सामाजिक स्थितियों के परिवर्तन का पता लग जाए तो यह परिवर्तित पारंपरिक गतिशीलता का मामला है। यदि परिवर्तन दो या तीन पीढ़ियों के बाद होते हैं तो इसे अंतःपारंपरिक गतिशीलता का मामला माना जाएगा।

सामाजिक स्थिति में परिवर्तन छोटे या अधिक दूरी वाले हो सकते हैं। गतिशीलता की रेंज में इस तथ्य का ध्यान रखा जाता है।

प्रचलित विश्वास के विपरीत, आधुनिक औद्योगिक समाजों में भी नीचे की तरफ गतिशीलता भी काफी व्यापक है। आधुनिक औद्योगिक समाजों में उपलब्धिपरक मानदंड ही ऊपर की तरफ गतिशीलता का मानदंड है। अधिकांश आधुनिक समाजों के बारे में माना जाता है कि वे अधिक खुली तथा अधिक सामाजिक गतिशीलता वाले होते हैं। फिर भी प्रत्येक समाज का अपना मानदंड है और गतिशीलता के प्रयासों में भी विभिन्न प्रकार से बाधाएँ आती हैं।

सामान्यतः कहा जाए तो सभी औद्योगिक समाजों में कमोबेश गतिशीलता की बराबर मात्रा होती है। साम्यवादी समाज में इतने बंद नहीं होते हैं जैसे कि सोचा जाता है।

ck/k ç'u 2

1) परिवर्तित पारस्परिक गतिशीलता और अंतःपारंपरिक गतिशीलता को लगभग दस पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) 'उच्च स्तर' तथा 'निम्न स्तर' की गतिशीलता के बारे में दस पंक्तियों में एक नोट लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

10-4 lkekftd xfr'khyrk dk vk/kfud fo'ys"k.k

1959 में सियमोर मार्टिन लिपसेट, रिनहार्ड बैंडिक्स तथा हंस एल.जैटरबर्ग ने शोध प्रस्तुत किया जिसमें दर्शाया गया कि सभी पूर्वी औद्योगिक समाजों में गतिशीलता दर प्रायः एक समान है। इस शोध ने सामाजिक गतिशीलता के विद्वानों में एक संवाद छेड़ दिया। और अधिक नवीन तथा विस्तृत आँकड़ों की सहायता से अनेक समाजशास्त्रियों ने इस शोध के संवाद में भाग लिया।

लिपसेट आदि विद्वानों के शोध का समर्थन करने के लिए यह उपयोगी है कि पहले औद्योगीकरण के प्रसिद्ध लचीले सिद्धांत को संक्षेप में समझा जाए जिसने गतिशीलता अध्ययनों को प्रेरित किया। हम इस शोध की मौलिक विशेषताएँ तथा इसके तर्कशास्त्र का भी वर्णन कर सकते हैं। एक बार इसे जानने के बाद हम लिपसेट, बैंडिक्स, जैटरबर्ग के सिद्धांत की औद्योगीकरण के सिद्धांत से तुलना कर सकते हैं। इसके बाद हम उन विद्वानों के विचारों को देखेंगे जिन्होंने लिपसेट, बैंडिक्स तथा जैटरबर्ग के विचारों पर दृढ़ता से संवाद किया तथा उसकी पुनर्स्थापना की।

10-4-1 vk|kxhdj.k dk yphyk fl)kr

लचीले सिद्धांत का मुख्य मत यह है कि इसके लिए कुछ निश्चित पारिभाषिक पूर्व आवश्यकताएँ तथा समाज को प्रभावित करने वाले कुछ अनिवार्य परिणाम होते हैं। अतः औद्योगिकरण से पूर्व समाजो की तुलना में औद्योगिक समाजों में गतिशीलता की प्रवृत्ति निम्नलिखित प्रकार से होती है–

1) प्रायः समग्र सामाजिक गतिशीलता की दर अपेक्षाकृत उच्च होती है और इसके अतिरिक्त ऊपर की गतिशीलता अर्थात् कम से अधिक लाभ की स्थितियाँ नीचे की तरफ वाली गतिशीलता से अधिक होती है।

2) गतिशीलता की तुलनात्मक दर या गतिशीलता के अवसर अधिक समान हैं। वे इस अर्थ में कि विभिन्न सामाजिक वर्गों वाले व्यक्ति और अधिक समान विषयों में प्रतिस्पर्धा करते हैं।

3) कुछ समय बाद सभी प्रकार की गतिशीलताओं में तथा तुलनात्मक रूप से सभी में समानता की डिग्री में वृद्धि की प्रवृत्ति होती है।

पीतम ब्लौ और ओडी डंकन (1967) उन प्रमुख समाजशास्त्रियों में से हैं जिन्होंने उपर्युक्त विचारधारा का संकेत किया। इस निष्कर्ष के कारण यह है कि–

1) औद्योगिक समाज में वैज्ञानिक विकसित तकनीकों के कारण गशीलता सामाजिक संरचना में श्रम विभाजन की निरंतर तथा प्रायः शीघ्र परिवर्तन की माँग करती है। स्वयं श्रम विभाजन की संकल्पना में अधिक विशिष्ट कार्यों के कारण अत्यधिक अंतर आ जाता है। इस प्रकार, उच्च गतिशीलता पीढ़ी दर पीढ़ी तथा व्यक्ति के जीवन–काल में चलती चली जाती है।

2) औद्योगीकरण के कारण स्वयं श्रम विभाजन की विभिन्न श्रेणि में विशेष व्यक्तियों के चयन और उनके वर्ग–निर्धारण के ठोस आधार बन जाते हैं। औद्योगिक व्यवसाय तथा उपलब्धि की होड़ चयन की युक्तिसंगत प्रक्रिया के अनुकूल है। इसके अतिरिक्त, अति योग्य व्यक्तियों की बढ़ती हुई माँग शिक्षा और प्रशिक्षण को बढ़ावा देती है। सामाजिक वर्गों के व्यक्ति शिक्षा प्राप्त कर सकें; और

3) चयन के नए तरीके अर्थव्यवस्था के नए क्षेत्रों अर्थात अत्यधिक उन्नत तकनीक वाले निर्माण उद्योगों और सेवाओं के लिए अनुकूल होंगे। ये नए तरीके बड़े प्रशासन संगठनों के बदले प्रभावी रूप के भी अनुकूल होंगे। इस प्रकार औद्योगिक जीवनधारा की प्रतिरोधी अर्थव्यवस्था के क्षेत्र दूर हट जाते हैं तथा उपलब्धिमूलक गतिशीलता अवस्था के व्यापक क्षेत्रों में फैल जाती है।

10-4-2 fyilV vkj tVjcxj dk fl)kr

लिपसेट और जैटरबर्ग का औद्योगिक समाज में गतिशीलता का सिद्धांत पर्याप्त रूप से। उपर्युक्त लचीली अवस्था में समाया हुआ है। फिर भी इस बात पर गौर किया जाए कि वे इस तर्क का समर्थन नहीं करते कि गतिशीलता में औद्योगिक विकास के साथ धीरे–धीरे वृद्धि होती है। उनके अनुसार, औद्योगिक समाज में गतिशीलता दर तथा आर्थिक उन्नति के बीच कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है। जब औद्योगीकरण एक निश्चित स्तर पर पहुँच जाता है तो सामाजिक गतिशीलता तुलनात्मक रूप से अधिक हो जाती है। वे अत्यधिक खुलेपन की प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप औद्योगिक समाजों की उच्च गतिशीलता को भी नहीं मानते। इस प्रकार की उच्च गतिशीलता मुख्य रूप से इन समाजों में संरचनात्मक परिवर्तनों से होने वाले प्रभावों के कारण होती है। लिपसेट और जैटरबर्ग की मुख्य परिकल्पना यह है कि सामाजिक गतिशीलता दर औद्योगिक समाजों में अधिक मौलिक समानता दर्शाती है।

10-4-3 fyilV vkj tVjcx d fl)kr dh iquLFkkiuk

लिपसेट और जैटरबर्ग की विचारधारा को दोहराने के लिए फीदरमैन, जौंस तथा होजर ने विकसित साधनों और तकनीकों से अनुसंधान किया। उन्होंने दर्शाया कि जब सामाजिक गतिशीलता की तुलनात्मक दर पर विचार किया जाए तभी यह विचारधारा लागू होती है। अन्यथा यदि सामाजिक गतिशीलता को संपूर्ण दरों में अभिव्यक्त किया यह विचारधारा सही नहीं है।

यदि कोई व्यक्तियों या समूहों की स्पष्ट विशेषताओं द्वारा निर्धारित संपूर्ण दरों को देखें तो संपूर्ण देश की एकसमान समानता निर्धारित नहीं की जा सकती। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि ये दरें अर्थव्यवस्था, तकनीकी और परिस्थितियों की संपूर्ण रेंज द्वारा व्यापक रूप से प्रभावित होती है और ये रंजा व्यापक रूप से बदलाती रहती है (गतिशीलता के संरचनात्मक संदर्भ में)।

vH;kl 2

उद्योग से संबंधित विभिन्न व्यक्तियों से मिलिए और देखिए कि भारत के लिए लिपसेट तथा जैटरबर्ग ने किस प्रकार की कल्पना की है। अपने नोट्स की अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों के नोट्स से तुलना कीजिए।

गतिशीलता की तुलनात्मक दरों पर अर्थात जब गतिशीलता पर ऐसे सभी प्रभावों की वास्तविकता के रूप में विचार किया जाए तो संपूर्ण राष्ट्रीय गतिशीलता की संभावनाएँ काफी अधिक होती हैं। इस मामले में केवल वे ही तत्व शामिल होते हैं जो दी गई संरचना के भीतर प्रतिस्पर्धा द्वारा विशिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने या वंचित रहने वाले विभिन्न वर्गों के तुलनात्मक अवसरों को प्रभावित करते हैं।

अंत में रॉबर्ट एरिक्सन तथा जॉन गोल्डलहोप द्वारा नो यूरोपीय देशों में किए गए अध्ययन में भी औद्योगीकरण के लचीले सिद्धांत का खंडन किया गया है। उन्होंने पूर्वी और पश्चिमी दोनों यूरोपीय समाजों का अध्ययन किया तथा उन्हें न तो उच्च स्तरों की तरफ सामान्य तथा अनिवार्य संपूर्ण गतिशीलता के और न ही राष्ट्रों में सामाजिक गतिशीलता के प्रमाण मिले। उन्हें न तो गतिशीलता दरों में संपूर्णता या तुलनात्मक रूप से किसी सुसंगत दिशा में परिवर्तन के और न ही किसी अवधि के बाद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्याप्त रूप से एकसमान होने की प्रवृत्ति के प्रमाण मिले।

10-4-4 lkekftd xfr'khyrk d v/;;u dh leL;k,¡

सामाजिक गतिशीलता की सर्वाधिक मौलिक जानकारी के बाद हमने प्रचलित तथा सामाजिक गतिशीलता के अधिक उन्नत निष्कर्षों से परिचित होने का भी प्रयास किया है। सामाजिक गतिशीलता की संकल्पना और इसके रूपों पर हमारी जानकारी का निष्कर्ष निकालने से पूर्व आवश्यक है कि इसके अध्ययन में आने वाली कम से कम बुनियादी समस्याओं का संकेत किया जाए।

एंटोनी गिड्डस का अनुकरण करते हुए हम संभावित समस्याओं की निम्नलिखित सूची बना सकते है

1) समयोपरांत कार्यों की प्रकृति बदल जाती है और यह हमेशा स्पष्ट नहीं होता कि एक जैसे व्यवसायों को वास्तव में कभी किसी रूप में माना जाता है।

उदाहरण के तौर पर, यह स्पष्ट नहीं है कि नीलपोश कार्य से सफेदपोश कार्य की गतिशीलता हमेशा उच्च गतिशीलता ही हो। हो सकता है कि नीलपोश निपुण श्रमिक सामान्यतः सफेदपोश कार्य करने वाले अधिकांश व्यक्तियों से अच्छी आर्थिक स्थिति में हों।

2) अंत–पारंपरिक गतिशीलता के अध्ययन में यह निर्णय करना कठिन है कि किस बिंदु पर तुलनात्मक व्यवसायों की तुलना की जाए। उदाहरण के तौर पर, हो सकता है कि पिता अपने व्यवसाय के मध्य में हो जबकि उसकी संतान अपना कार्य–जीवन आरंभ कर रही हो। अभिभावक और बच्चे हो सकता है एक–साथ गतिशील हों तथा यह भी कि एक ही दिशा में या (उससे कम) भिन्न दिशाओं में। अब समस्या आती है कि उनके कार्यों की आरंभ में या अंत में किए रूप में तुलना की जाए।

फिर भी, इन समस्याओं का कुछ सीमा तक समाधान किया जा सकता है। जब यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी एक अध्ययन में शामिल कार्य के सम्मान और प्रकृति में समयोपरांत संपूर्ण परिवर्तन आ जाता है तो हम व्यावसायिक श्रेणियों का वर्गीकरण करते समय इस बात का ध्यान रख सकते हैं। उपर्युक्त दूसरी समस्या भी आँकड़ों का ध्यान रखकर दूर की जा सकती है। यह अभिभावकों और बच्चों के संबंधित व्यवसायों की आरंभ और अंत में तुलना करके किया जा सकता है।

ck/k ç'u 3

1) संक्षेप में लिपसेट तथा जैटरबर्ग के सिद्धांत का दस पंक्तियों में वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) सामाजिक गतिशीलता के अध्ययन में आने वाली दो समस्याओं का पाँच पंक्तियों में वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

10-5 lkjka'k

औद्योगीकरण के लचीले सिद्धांत पर सामाजिक गतिशीलता का आधुनिक विश्लेषण करते समय अनिवार्य रूप से संवाद किया जाता है। औद्योगीकरण का लचीला सिद्धांत बताता है कि एक अवधि के बाद सभी औद्योगिक समाज खुलेपन की एक जैसी विशेषताओं को अपनाते हैं। इस तरह, सामाजिक गतिशीलता दर और रूपों में भी एक समानता की प्रवृत्ति होती है।

लिपसेट, बैंडिक्स और जैटरबर्ग के सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन बताता है कि औद्योगिक समाजों में गतिशीलता दरों में बुनियादी समानताएँ होती हैं। वे यह भी बताते हैं कि औद्योगिक समाजों की उच्च गतिशीलता का इनके खुलेपन पर कम प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, वे उच्च गतिशीलता को इन समाजों के संरचनात्मक परिवर्तन का परिणाम मानते हैं।

फीदरमैन, जॉन्स और हाउजर बताते हैं कि यदि सामाजिक गतिशीलता की तुलनात्मक दरों पर विचार किया जाता है तो औद्योगिक समाजों में गतिशीलता प्रवृत्ति की समानता भी उसी के अनुरूप होगी।

एरिक्सन और गोल्डहोप ने अपने अध्ययनों के माध्यम से दर्शाया है कि विभिन्न समाजों में गतिशीलता की कोई एक जैसी प्रवृत्ति नहीं होती।

सामाजिक गतिशीलता के अध्ययनों में इसके साथ जुड़ी समस्याओं का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। कार्य स्थिति के द्वारा निर्धारित की गई विशेष सामाजिक स्थिति अपरिवर्तनीय नहीं है क्योंकि समयोपरांत व्यवसाय से जुड़े मान बदलते रहते हैं। अतः गैर–पारंपरिक गतिशीलता का अध्ययन करते समय इस बात का सावधानी से निर्णय करना चाहिए कि अभिभावकों और बच्चों के व्यवसायों की किस बिंदु पर तुलना की जाए।

10-6 'kCnkoyh

çfr;ksfxRed xfr'khyrk % यह गतिशीलता खुली प्रतियोगिता के माध्यम से पैदा होती है।

le&Lrj xfr'khyrk % इसका अर्थ है समाज में हैसियत या स्थिति में परिवर्तन होना। इसमें आवश्यक नहीं कि स्तर में परिवर्तन हो।

çk;ksftr xfr'khyrk % इस तरह की गतिशीलता ऊपर की तरफ होती है जो 'प्रायोजक' अथवा किसी ऊँचे व्यक्ति या वर्ग के द्वारा व्यक्तिगत को आमंत्रित किया जाता है।

ifjofrZr ikjLifjd xfr'khyrk % यह गतिशीलता विभिन्न पीढ़ियों के प्रयासों से उत्पन्न होती है। अंतःपारंपरिक गतिशीलता : इस प्रकार की गतिशीलता दो या इससे अधिक पीढ़ियों के दौरान पैदा हो जाती है।

10-7 dqN mi;ksxh iqLrdsa

अमेरिकन व्यावसायिक संरचना,

ब्लौ, पी.एम तथा ओ.डी. डंकन (1967), विले : न्यूयॉर्क

निरंतर परिवर्तन : औद्योगिक समाजों में वर्ग

गतिशीलता का एक अध्ययन

एरिक्सन, आर तथा जे.एच.गोल्डथ्रोप (1987) क्लैरंडोन प्रेस, ऑक्सफोर्ड

ब्रिटेन : समाजशास्त्र, गिड्डन्स, ए (1989), पॉलिटी प्रैस

औद्योगिक समाजों में सामाजिक गतिशीलता, लिपसेट, एस.एम तथा आर. बैंडिक्स (1959)

बेरकेली : कैलिफोर्निया प्रेस विश्वविद्यालय

सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता, सोरोकिन पी.ए (1927), जनरल : फ्री प्रेस

10-8 ckk/k ç'ukas ds mÙkj

ckk/k ç'u 1

1) प्रतियोगितात्मक गतिशीलता में सर्वोत्तम स्थिति एक उद्देश्य होती है जिसके लिए खुली प्रतियोगिता होती है। सफलता उम्मीदवार के प्रयत्नों पर निर्भर करती है। इसका अर्थ है कि प्रतियोगिता के कुछ नियम होते हैं। इसका भावार्थ यह है कि सफल उच्च गतिशीलता स्थापित उम्मीदवार के हाथ में नहीं है।

2) प्रायोजित गतिशीलता की स्थिति में स्थापित व्यक्ति उम्मीदवार को अपने समूह में नियुक्त करते हैं। इसके लिए आवश्यक योग्यता खुली प्रतियोगिता प्रमाण या संघर्ष से प्राप्त नहीं की जा सकती। इस प्रकार, उच्च गतिशीलता ऐसे किसी सदस्य द्वारा प्रायोजित की जाती है। .

ckk/k ç'u 2

1) सामाजिक गतिशीलता का विश्लेषण करने के दो विभिन्न तरीके हैं। प्रथम है– परिवर्तित गतिशीलता। इसके अध्ययन में व्यक्तियों के व्यवसायों तथा सामाजिक स्तर में कि वे कहाँ तक ऊपर या नीचे की तरफ गए हैं, इसको शामिल किया जाता है।

   दूसरा तरीका है अंतःपारंपरिक गतिशीलता। इसमें पीढ़ी दर पीढ़ी व्यवसायों और सामाजिक स्थिति की गतिशीलता का अध्ययन किया जाता है।

2) नीचे की तरफ गतिशीलता में व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का ह्रास होता है जबकि ऊपर की तरफ गतिशीलता में उसकी सामाजिक हैसियत में वृद्धि होती है। नीचे की तरफ गतिशीलता.............। गिड्डन के अनुसार, इंगलैंड में 20 प्रतिशत व्यक्ति नीचे की तरफ अंतःपारंपरिक रूप से गतिशील हैं। ऊपर की तरफ गतिशीलता में पहले से अधिक धन, शक्ति और हैसियत प्राप्त करना शामिल होता है।

ckk/k ç'u 3

1) लिपसेट तथा जैटरबर्ग के अनुसार, औद्योगिक समाज तथा गतिशीलता दरों में कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता। फिर भी जब औद्योगीकरण एक निश्चित स्तर पर पहुँच जाता है तो सामाजिक गतिशीलता अपेक्षाकृत उच्च हो जाती है। वे औद्योगिक समाजों की उच्च गतिशीलता को अधिक खुलेपन का परिणाम नहीं मानते अपितु इसे संरचनात्मक परिवर्तनों का परिणाम अनुभव करते हैं।

2) सामाजिक गतिशीलता के अध्ययन की दो समस्याएँ है

क) समयोपरांत कार्यों की प्रकृति में परिवर्तन हो जाता है।

ख) अंतःपारंपरिक गतिशीलता के अध्ययनों में व्यवसायों की तुलनाओं का निर्धारण करना कठिन होता है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

bdkbZ 11 lkekftd xfr'khyrk d ?kVd ,o 'kfä;k

bdkbZ dh :ijs[kk

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 जनसांख्यिकीय घटक

11.3 प्रतिभा एवं योग्यता

11.3.1 कुलीन सिद्धांत

11.4 सामाजिक वातावरण में परिर्वतन

11.4.1 औद्योगीकरण एवं गतिशीलता

11.4.2 उपलब्ध रिक्त स्थान

11.4.3 कानूनी प्रतिबंध

11.4.4 पद और स्थिति

11.4.5 समरूप परिकल्पना

11.5 अधोमुखी गतिशीलता

11.6 गतिशीलता के अवरोधक

11.7 मार्क्सवादी विचारधारा

11.8 व्यक्तिपरक घटक

11.9 सामाजिक गतिशीलता एवं सामाजिक परिवर्तन

11.10 सारांश

11.11 शब्दावली

11.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

11-0 mís';

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- गतिशीलता को प्रभावित करने वाले घटकों को समझ सकेंगे; और
- इसपर आप अपने विभिन्न विचार प्रस्तुत कर सकेंगे।

11-1 çLrkouk

सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक स्तरीकरण के उन क्षेत्रों में से एक है जिसमें सबसे अधिक अनुसंधान हुए हैं। अभी तक आप जान चुके हैं कि विभिन्न समाजों में गतिशीलता का क्या अर्थ है। इस इकाई में हम कुछ ऐसे घटकों के बारे में विचार करेंगे जो सामाजिक गतिशीलता पर प्रभाव डालते हैं। इसलिए चर्चा करने से पूर्व हमें

कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए। पहली बात यह है कि सामाजिक गतिशीलता स्तरीकरण के सिद्धांत से अलग नहीं है (क्योंकि जब हम सामाजिक गतिशीलता के घटकों की बात करते हैं तो अप्रत्यक्ष रूप से। मस्तिष्क में कोई सिद्धांत होता है।) अथवा समाज की संरचना किस प्रकार होती है। दूसरे शब्दों में इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि सामाजिक गतिशीलता के अध्ययन को किसी एक समाज की स्थापना या उसकी उत्पत्ति से अलग नहीं किया जा सकता।

दूसरा पक्ष यह है कि जब हम सामाजिक गतिशीलता पर प्रभाव डालने वाले घटकों की चर्चा करेंगे तब इन्हें आप गतिहीन अथवा स्थिर बिल्कुल न मानें क्योंकि ये तत्व परिवर्तनीय होते हैं। सामाजिक गतिशीलता के अथवा उसकी रूढ़िवादिता के किसी समाज और किसी विशेष सामाजिक स्तरीकरण के लिए दूरगामी परिणाम होते हैं। चर्चा में क्रमशः विस्तृत विवरण दिया जाएगा। अंत में विभिन्न विद्वानों के मतांतरों को भी प्रस्तुत करेंगे। जो उन्होंने सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करने वाले घटकों के संबंध में जाना है। इस भाग में हम गतिशीलता के प्रश्न पर विभिन्न तरीकों से किए गए विचारों पर संक्षिप्त चर्चा करेंगे। यह .. सच है कि सामाजिक गतिशीलता सभी समाजों में मौजूद होती है। यहाँ तक कि भारत में जाति प्रथा के दायरे में आने वाले समाज जो खास कर 'अवरुद्ध' या बंद होते हैं उनमें भी गतिशीलता को देखा जा सकता है और औद्योगीकरण जहाँ सामाजिक गतिशीलता की दर अत्यधिक होती। इसीलिए सबसे अधिक गतिशीलता के संबंध में अनुसंधान औद्योगिक समाजों में, सामाजिक गतिशीलता, तथा वहाँ पर गतिशीलता को प्रभावित करने वाले घटकों पर हुए हैं। रूस के प्रसिद्ध समाजशास्त्री, सोरोकिन ने सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन प्रमुख रूप से किया है। उनके अनुसार, कुछ प्राथमिक घटक होते हैं जो सभी समाजों में गतिशीलता को प्रभावित करते हैं। तथा दूसरी तरह के वे घटक होते हैं जो विशेष प्रकार के होते हैं। इसलिए वे खास समाजों में किसी खास समय पर ही अपना प्रभाव डालते हैं। उनका तर्क है कि कोई भी समाज पूरी तरह से अवरुद्ध या बंद नहीं होता है। साथ ही, ऐसे भी समाज नहीं होते हैं जो बिल्कुल या पूर्ण रूप से मुक्त हों क्योंकि खुले समाजों में भी कहीं न कहीं गतिशीलता के लिए बंधन होते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि कोई भी समाज न तो पूर्ण रूप से अवरुद्ध होता है और न ही पूर्ण मुक्त होता है। उन्होंने प्राथमिक घटकों की सूची बनाई है जिनकी संख्या चार है। ये हैं– जनसांख्यिकीय (जनसंख्यात्मक) घटक, अभिभावकों तथा बच्चों की सामर्थ्य या योग्यता, सामाजिक वर्गों में व्यक्तियों के गलत निर्धारण, तथा सबसे महत्वपूर्ण है–परिस्थितियों का परिवर्तन आइए अब हम क्रमशः प्रत्येक घटक पर चर्चा करें।

11-2 tulkf[;dh; ?kVd

जनसांख्यिकीय घटक एक ऐसा घटक है जो सभी समाजों में गतिशीलता को प्रभावित करता है। प्रायः देखा गया है कि ऊँचे वर्गों में जन्म–दर निम्न वर्गों की जन्म–दर की अपेक्षा कम होती है। यद्यपि मृत्यु–दर भी निम्न वर्गों में अधिक होती है, कुल मिलाकर प्रजनन दर। ऐसी होती है कि प्रायः उच्च स्थिति में निम्न वर्गों के सदस्यों के लिए कुछ स्थान रहते हैं। उदाहरण के लिए, पेरेने अपने अध्ययन में पाया है कि फ्रांस के कुछ क्षेत्रों में 12000 संख्या में 215 कुलीन वंशों में से एक शताब्दी बाद केवल 149 की संख्या रह गई। आम तौर पर उन्होंने देखा है कि इन वंशावलियों का जीवन–काल तीन से चार पीढ़ियों तक ही रहा। उसके बाद वे या तो उत्पन्न गैर–कुलीन वंशों द्वारा अथवा समानांतर वंशों द्वारा स्थापन्न कर दिए गए। इसी तरह

से, एलेक्स इंकलेस ने अपने अध्ययन में जो सोवियत संघ के स्तरीकरण से संबंधित है दर्शाया है कि इस शताब्दी के मध्य में बहुत ही अधिक गतिशीलता रही है क्योंकि इस समय युद्ध में बहुत लोग अपनी जान गंवा चुके थे। इस प्रकार, यह समय की आवश्यकता थी। इसके साथ ही दूसरा कारण तीव्र औद्योगीकरण रहा।

यह तथ्य केवल ऊँचे तथा निम्न समूहों के संबंध में ही नहीं अपितु शहरी और ग्रामीण जनसंख्या के संबंध में भी कहा जा सकता है। ग्रामीणों में प्रायः प्रजनन दर ऊँची रहती है। इसके बावजूद, शहरी जनसंख्या ग्रामीण जनसंख्या की तुलना में अधिक तीव्रता से बढ़ी है। इसका मुख्य कारण जनसंख्या में वास्तविक वृद्धि नहीं है, अपितु इस जनसंख्या में वृद्धि के कारण बड़ी संख्या में शहरी प्रव्रजन का होना है।

c,Dl 11-01

जनसांख्यिकीय तत्व सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करता है। आज आयुर्विज्ञान एवं चिकित्सा पद्धति में विकास और अन्य घटकों के कारण लोगों के जीवन–काल अर्थात् आयु में वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप सेवा निवृत्ति की आयु अधिक हो गई। परिणामस्वरूप नई भर्ती के लिए पदों की संख्या कम रह गई। इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि कार्य के लिए समाज में मानव संसाधनों की भरमार है। क्योंकि काम करने की आयु में विस्तार हो गया है। दूसरी तरफ, वृद्धों की देखभाल करने की समस्या भी इसी कारण पैदा हुई है। इस तरह की समस्या पश्चिमी समाजों में कई दशकों से चली आ रही है जिसका वहाँ सामना किया जा रहा है।

इसके कारण, साथ ही अनेक वृद्ध लोगों के लिए सदन, अस्पताल आदि भी खोलने पड़े हैं जहाँ पर वृद्धों को रखा जाता है और बीमार होने पर उनका इलाज तथा देखभाल की जाती है। गतिशीलता के दृष्टिकोण से इसे यूँ देखा जाना चाहिए कि इसके परिणामस्वरूप नए पदों का सृजन भी हुआ है जिन्हें अवश्य ही भरा जाना है।

अतः यह कहा जा सकता है कि जनसांख्यिकीय घटक निश्चित रूप से सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करता है, परंतु यह अपने आप में विशुद्ध रूप से जैविक परिघटना नहीं है क्योंकि इसमें सामान्यतः सामाजिक घटक भी हैं। उदाहरणार्थ, मैंडेलबाम तथा अन्य विद्वानों ने लिखा है कि किस प्रकार सांस्कृतिक घटक जैसे एक पुत्र की आकांक्षा जनसंख्या संरचना में किस तरह प्रभावित करते हैं।

11-3 çfrHkk ,oa ;ksX;rk

सामाजिक गतिशीलता के लिए प्रतिभा एवं योग्यता को घटकों के रूप में देखने वाले अनेक लोगों ने विभिन्न तरीकों से चर्चा की है। सोरोकिन ने अपने अध्ययन में इंगित किया है कि प्रायः अभिभावकों और बच्चों की योग्यता समान नहीं होती है। आरोपित अथवा वंशगत समाजों में बच्चे सामान्यतः अपने माता–पिता की तरह अपनी वंशानुगत स्थिति के लिए हमेशा उपयुक्त नहीं होते। इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि जो बच्चे अपने अभिभावकों से सम्पत्ति या पद प्राप्त करते हैं उसे वे संभाल नहीं पाते। इस समस्या से संबंधित अनेक मुद्दों के संबंध में सोरोकिन ने बहुत सारे सुझाव प्रस्तुत किए हैं। व्यक्तिगत रूप से विरासत में मिली स्थिति के अयोग्य होने पर उनपर अत्यधिक दबाव पड़ता है कि वे इस स्थिति को छोड़ दें। इसलिए पहले से ही अधिकार प्राप्त नव–आगंतुक रिक्त स्थिति को अपनाते जाते हैं। लिपसेट तथा बैन्डिक्स का कहना है

कि हमेशा ही नए प्रतिभाशाली लोग आते रहते हैं या पैदा होते रहते हैं और कहीं न कहीं उनका समावेश हो जाता है। यहाँ तक कि पैतृक पद और स्थिति प्राप्त पैतृक समाजों में भी व्यक्तिगत रूप से प्रतिभाशाली व्यक्तियों के उर्ध्व स्तर की गतिशीलता के अवसर उपलब्ध होते हैं। ब्लॉच ने अपने अध्ययन में दिखाया है कि सामंतवाद की प्रथम स्थिति में भी अदम्य सास वाले लोग प्रगति कर सकते थे।

इसी प्रकार, बेरगल ने अपने सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययन में इस तत्व को प्रदर्शित किया है। उनके अनुसार रुढ़िवादी पदानुक्रम सामंती व्यवस्था में भी निम्न जाति में जन्मे व्यक्ति को भी प्रतिभा के बल पर ऊँचे स्तर की गतिशीलता का अवसर मिलता था। सामंतवाद में जो बंधुआ मजदूर या बंधुआ नौकर होते थे, उनकी स्वामिभक्ति के कारण उन्हें 'लिपिकीय वर्ग' में शामिल किया गया था। इसके साथ ही जो लोग घरों में काम करते थे, उन्हें भी सेवा के पुरस्कार के रूप में जागीरें तक भी दी जाती थी। टर्नर ने अपने अध्ययन में इस प्रकार की गतिशीलता को 'प्रायोजित गतिशीलता' कहा है (प्रतियोगी गतिशीलता के विपरीत)। फिर भी गतिशीलता के पूर्व–औद्योगीकरण रूप में इसका संदर्भ नहीं लिया जा सकता।

जब समाजों में यहाँ तक खुले समाजों में भी किसी नई प्रतिभा के समावेश को समस्यामूलक की दृष्टि से देखा जाता है तो इसे आसानी से स्वीकृत नहीं किया जाता है। कहने का आशय यह है कि प्रगतिशील समाज भी वास्तव में उतने खुले नहीं होते हैं, जैसा कि सामान्यतः माना जाता है। इस संदर्भ में डेविस और मूरे के कार्यात्मक सिद्धांत के बारे में। संक्षेप में जानकारी देना समीचीन रहेगा। सारांश में यह सिद्धांत कहता है कि विभिन्न सामाजिक स्थितियों के कारण ही प्रतिभा और प्रशिक्षण के आधार पर व्यक्तिगत स्तर एवं प्रस्थिति को समाज में स्थापित किया जाता है। उस समय समाज में उसकी स्थिति भिन्न होती है। विभिन्न लाभ उनके साथ जुड़े होने के कारण अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थितियाँ अधिक योग्य व्यक्तियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इस प्रकार से समाज बहुत महत्वपूर्ण स्थितियों में सबसे अच्छे मानव संसाधनों का प्रयोग करने में सफल होता है। अतः स्तरीकरण एक साधन है जिससे सामाजिक प्रस्थापन तथा प्रेरणा का स्वरूप बनता है।

जहाँ इस सिद्धांत को परिष्कृत तथा कठोर माना गया इसकी बुनियादी आलोचना भी हुई तथा इसका अनेक प्रकार से खंडन भी किया गया। वर्तमान चर्चा के संदर्भ में अर्थात् व्यक्तियों की योग्यता के संदर्भ में विद्वानों ने पाया कि तथाकथित खुले समाज कहीं न कहीं अधिक रूढ़िवादी होते हैं जो व्यक्तियों को उनकी योग्यता के आधार पर सामाजिक स्थिति प्रदान करते हैं। यद्यपि वर्ग की उत्पत्ति में जाति या नस्ल जैसी असमानता स्पष्ट नहीं है तो भी पीढ़ी दर पीढ़ी लगभग असमानता जैसी स्थिति का पुनर्जन्म होता रहता है। अवसरों की असमानता का अर्थ हैकृनिम्न वर्ग का अधिक योग्य व्यक्ति भी उन्नति करने में असमर्थ रहता है अथवा उसे अवसर प्राप्त नहीं होते। हम यहाँ पर कह सकते हैं कि माइकल यंग द्वारा दिया गया व्यंग्यात्मक कथन कि 'मेघाविता का उदय', 'खुले' समाजों में होता है वास्तव में गलत है। वह इस मिथक का प्रभावी ढंग से खंडन करता है कि वास्तव में प्रतिभा और योग्यता का जन्म खुले समाजों में होता है। पश्चिमी औद्योगिक समाजों में गतिशीलता के वास्तविक अध्ययन स्पष्ट करते हैं कि अधिकांश गतिशीलता 'जन–गतिशीलता' है। और यह गतिशीलता श्रमिकध्गैर–श्रमिक, दोनों में है। वर्ग की उत्पत्ति सबसे ऊँची स्थितियों और सबसे निम्न स्थितियों में आज भी बनी हुई है तथा स्वयं ही स्थापित हो जाती है। इसलिए

यह कहा जा सकता है कि गतिशीलता को स्पष्ट करने के लिए प्रतिभा जैसे घटक की बहुत मामूली भूमिका होती है।

11-3-1 dqyhu fl)kr

विल्फ्रेडो पैरेटो कुलीन सिद्धांतवादियों में से एक ने अपने अध्ययन में तर्क दिया है कि व्यक्तिगत रूप से लोग कुछ स्थितियों को प्राप्त करते हैं उसमें प्रतिभा और योग्यता ही मुख्य कारण होते हैं। उन्होंने कहा है कि स्वाभाविक योग्यताओं में स्वाभाविक ह्रास होता है या फिर समय के अंतराल में निम्न स्तर के लोग अपनी उन्हीं योग्यताओं को प्रदर्शित कर सकते हैं। इस तरह से कुलीन के व्यक्तिगत स्तर में परिवर्तन होता है। पैरेटो का कहना है कि 'इतिहास कुलीन वंशों का कब्रिस्तान है।' यह कुलीनों की गतिशीलता का प्रसिद्ध सिद्धांत है।

पैरेटो के सिद्धांत में गतिशीलता अथवा संचरण दो प्रकार के हैं। प्रथम, प्रतिभाशाली व्यक्ति जो निम्न स्तर से आता है और उच्च स्तर में प्रवेश करता है। दूसरे, बहुत बार समय में जब ऊँचे समूहों की योग्यता पर प्रश्न–चिह्न लगाया जाता है। इसका अर्थ है कि प्राय सम्न स्तर की ओर से उच्च वर्गों को चुनौती दी जाती है और उनकी श्रेष्ठता को नकार दिया जाता है। दूसरे शब्दों में इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि व्यक्तिगत और सामूहिक गतिशीलता संभव होती है। मैक्स क्लुकमैन ने इसे 'बार–बार परिवर्तन' का नाम दिया है जिसे अफ्रीकी सरकार के परिवर्तनों में देखा जा सकता है। अतः ऐसा हो सकता है कि इस प्रकार के परिवर्तन दी गई व्यवस्था के अनुरूप न हो लेकिन व्यवस्था में परिवर्तन कर देते हैं अर्थात् स्थिति की संरचना में स्व–परिवर्तन हो जाता है। मॉरिस डुवेरजर ने इसे 'सामाजिक व्यवस्था में' और 'सामाजिक व्यवस्था से परे' संघर्ष के रूप में माना है।

11-4 lkekftd okrkoj.k esa ifjorZu

सोरोकिन ने सभी घटकों को तर्कसंगत माना है। लेकिन सामाजिक वातावरण में होने वाले परिवर्तन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। अप्रत्यक्ष रूप से यह सच है कि ये जनसांख्यिकीय घटक (जैसे चिकित्सा में प्रगति के कारण जीवन–काल में वृद्धि होना) तथा व्यक्तिगत प्रतिभाओं (उदाहरण के लिए, शैक्षिक अवसरों के विस्तार से प्रतिभा खोज की संभावना) को प्रभावित कर सकते हैं।

गतिशीलता के लिए सबसे प्रमुख घटक हैं– सामाजिक परिवर्तन। परिवर्तन अनेक प्रकार के होते हैंः आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, वैधानिक, प्रौद्योगिकीय तथा अन्य प्रकार के परिवर्तन सामाजिक गतिशीलता पर प्रभाव डालते हैं। यह परिवर्तन की व्यापक प्रक्रिया है जो न केवल गतिशीलता पर प्रभाव डालती है बल्कि समाज के अन्य पक्षों पर भी समान रूप से अपना प्रभाव डालती है। सामाजिक वैज्ञानिकों के अनुसार सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण आर्थिक घटकों में से एक है– औद्योगीकरण।

11-4-1 vkS|ksxhdj.k ,oa xfr'khyrk

गतिशीलता पर अनेक सिद्धांत बनाए गए हैं जिनमें सामाजिक गतिशीलता के साथ औद्योगीकरण के संबंधों को जोड़ा गया है। इस क्षेत्र में लिपसेट तथा बेन्डिक्स के एक महत्वपूर्ण तर्क के अनुसार पूर्व–औद्योगिक गतिशीलता दरों में औद्योगीकरण ने

गतिशीलता में अत्यधिक वृद्धि की है। एक बार तो सभी समाज औद्योगीकरण के एक विशेष स्तर तक अवश्य पहुँचे हैं। इस तरह से देखने में आया है कि सामाजिक गतिशीलता की उनकी वृद्धि दर एकसमान है। इसी संदर्भ में केर तथा अन्य लोगों द्वारा प्रतिपादित कुछ भिन्न लेकिन संबंधित सिद्धांत है– 'समरूप सिद्धांत'। इनका कहना है कि सभी औद्योगिक समाज गतिशीलता के एक सामान्य ढाँचे की ओर अग्रसर होते हैं जिसमें अन्य घटकों के साथ–साथ समग्र स्तरीकरण का रूप भी समान होता है।

आइए इस संबंध में सबसे पहले लिपसेट तथा बेन्डिक्स के सिद्धांत पर चर्चा करें। इसमें यूरोप एवं अमेरिका के अनेक देशों के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जो बहुत प्रसिद्ध है। उन्होंने दो मुख्य परिकल्पनाओं को जाँच के लिए हमारे समक्ष रखा है। उनका पहला सिद्धांत है कि एक बार तो सभी समाजों ने औद्योगीकरण के खास स्तर को प्राप्त किया है तथा उनमें गतिशीलता की दर पूर्व–औद्योगीकरण से काफी अधिक थी। उनकी दूसरी आम धारणा यह है कि संयुक्त राज्य अमेरिका ने यूरोपीय देशों की तुलना में गतिशीलता के लिए अधिक अवसर प्रदान किए हैं। उनके आँकड़े स्वयं बताते हैं कि उनका प्रथम सिद्धांत मानने योग्य है किंतु दूसरी परिकल्पना स्वीकार्य नहीं है। लिपसेट तथा बैन्डिक्स ने औद्योगिक समाज में गतिशीलता के घटकों पाँच प्रमुख तत्वों में विभाजित किया है, जो इस प्रकार हैं–

i) उपलब्ध रिक्तियों की संख्या में परिवर्तन

ii) प्रजनन क्षमता की विभिन्न दरें

iii) व्यवसायों के अनुसार स्थितियों में परिवर्तन

iv) विरासत में प्राप्त स्थितियों की संख्या में परिवर्तन

v) संभावित अवसरों से संबंधित कानूनी प्रतिबंधों में परिवर्तन।

इनमें से कुछ विभिन्न प्रजनन दरों जैसे घटकों पर पहले ही चर्चा की जा चुकी है। अब हम शेष घटकों पर चर्चा करेंगे।

11-4-2 miyC/k fjä LFkku

यह तो सभी लोग मानते हैं कि औद्योगीकरण कृषि से व्यावसायिक संरचना में तथा इसके बाद सेवा क्षेत्र में संचरण हुआ है। उद्योग में संचरण होते ही समाज में अचानक तीव्र गति से आर्थिक गतिविधियों का जन्म हुआ और समाज में उपलब्ध पद या स्थितियाँ जो मौजूद थी, उनकी संख्या में आशतीत वृद्धि हुई। इसके अनेक दस्तावेज मौजूद हैं। ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों का नगरों और शहरों की ओर अत्यधिक प्रव्रजन हुआ क्योंकि गाँवों के लोग फैक्ट्रियों में रोजगार ढूँढने के लिए शहरों की ओर निकल पड़े जो सामाजिक गतिशीलता का एक रूप है। इसमें भौगोलिक पहलू तो है ही, साथ ही उर्ध्व स्तर भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रायः यह तो स्पष्ट ही है कि ग्रामीण लोगों को शहर में रोजगार मिलने से उनके पद, स्थिति और प्रतिष्ठा में अवश्य ही वृद्धि होगी जिससे उनका स्तर ऊँचा होगा और समाज की गतिशीलता ऊंचे स्तर की ओर बढ़ेगी। यहाँ पर दूसरे उदाहरण भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं। इससे अनेक सफेदपोश स्थितियों का जन्म हुआ जैसे कि कंप्यूटर व्यवसाय में। इससे उपलब्ध रिक्तियों अथवा पदों की संख्या में वृद्धि हुई है। इस तरह से हम कह सकते हैं कि औद्योगीकरण एक

महत्वपूर्ण घटक है जिसके कारण सामाजिक गतिशीलता में न केवल तीव्रता आई बल्कि इसमें वृद्धि भी हुई है।

11-4-3 dkuuh çfrcU/k

राजनैतिक और कानूनी ढाँचे में परिवर्तन भी सामाजिक गतिशीलता का महत्वपूर्ण साधन बन सकते हैं। भारत में जाति प्रथा के कारण लोगों में पारंपरिक कार्यों का बंटवारा किया हुआ था। तथा कुछ कार्य जैसे पढ़ना—पढ़ाना निम्न वर्ग के लोगों के लिए कानूनी या पारंपरिक रूप से प्रतिबंधित थे। राजनैतिक व्यवस्था का लोकतंत्रीकरण होने से कानून के तहत सभी नागरिकों के लिए समान अधिकारों की संकल्पना से सामाजिक गतिशीलता में जो रुकावटें थीं, उन्हें कानून के द्वारा समाप्त कर दिया गया। इन प्रावधानों के साथ ही सब नागरिकों को समान मताधिकार और पंचायती राज की व्यवस्था इत्यादि की स्थापना करके राजनैतिक क्षेत्र में सभी नागरिकों के लिए समान रूप से प्रगति एवं विकास के द्वार खोल दिए गए जो अब प्रतिबंधित थे। आनंद चक्रवर्ती ने राजस्थान में देवीसर गाँव का अध्ययन किया है जिसमें उन्होंने दर्शाया है कि किस तरह से राजनैतिक क्षेत्र में परिवर्तन हुआ और सामाजिक गतिशीलता के लिए किस प्रकार से उसका उपयोग हुआ। दूसरे उदाहरण में बेले ने उड़ीसा के एक गाँव का अध्ययन किया है जिसमें बताया गया है कि राजनैतिक शक्ति प्राप्त करने के लिए किस—किस तरह के परिहासपूर्ण हथकंडे अपनाए गए। उपर्युक्त दोनों उदाहरणों से सिद्ध होता है कि पुराने समाजों के जातिगत प्रतिबंधों को कानून द्वारा निरस्त करने से निश्चित रूप से सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई।

इस तथ्य के संबंध में कहा जा सकता है कि औद्योगीकरण और उसके लिए कुशल व्यक्तियों की माँग का अभी तक पता नहीं था। यह पारंपरिक विशेषज्ञता के आधार पर हैसियत प्राप्त करने से भिन्न परिस्थिति थी। इससे वंशानुगत स्थितियों की संख्या में गिरावट आई तथा उपलब्धता के आधार पर भरी जाने वाली स्थितियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई। इसमें सबसे बड़ी भूमिका शिक्षा व्यवस्था की रही। इस अध्याय में शिक्षा पर चर्चा नहीं की जाएगी क्योंकि शिक्षा के स्तरीकरण से संबंधों की चर्चा हम अपने पाठ्यक्रमों में पहले। कर चुके हैं। परंतु यहाँ यह कहना अत्यंत आवश्यक है कि यह गैर—पारंपरिक स्थितियों में वृद्धि से सीधे संबंधित है।

11-4-4 in vkj fLFkfr

किसी व्यक्ति की स्थिति में बिना किसी परिवर्तन के भी गतिशीलता आ सकती है, यदि उसकी स्थिति के रैंक में परिवर्तन हो जाए तो। उदाहरण के लिए, अमेरिका में एक अध्ययन से पता चलता है कि पचास के दशक में बीसवें दशक की तुलना में सरकारी पदों की अधिक प्रतिष्ठा थी। इस तरह कहा जा सकता है कि सरकारी नौकरों ने अपने काम में परिवर्तन किए बिना उर्ध्व सामाजिक गतिशीलता का अनुभव किया। निस्संदेह इससे नीचे की ओर भी गतिशीलता देखी जा सकती है। कई बार कुछ कार्यों की प्रतिष्ठा कम हो जाने से वे पहले की अपेक्षा समाज तथा अर्थव्यवस्था में कम महत्वपूर्ण हो जाते हैं और इन कार्यों को करने वालों की अवनति हो जाती है।

11-4-5 le:i ifjdYiuk

औद्योगीकरण और स्तरीकरण के संबंधों के बारे में एक प्रसिद्ध और अत्यधिक बहस वाली परिकल्पना हैकृसमरूप परिकल्पना। कैर तथा अन्य लोगों ने इस बारे में स्पष्ट

वर्णन किया है। उनके अनुसार आज की दुनिया में औद्योगीकरण एक वास्तविक घटक रहा है जो सभी उद्योगीकृत समाजों को भविष्य के एक सामान्य समाज की ओर प्रेरित करता है जिसे वे बहुवादी वेतनभोगी औद्योगिक समाज के नाम से पुकारते हैं। इन समाजों में स्तरीकरण का समान ढाँचा साथ ही गतिशीलता का भी समान रूप होता है। इस प्रकार की स्थिति में गतिशीलता दर निश्चित रूप से ऊँची होगी क्योंकि औद्योगीकरण की माँग व्यक्तियों की एक स्थिति से दूसरी स्थिति में मुक्त एवं आसान गतिशीलता को उत्पन्न करेगी। एक अर्थ में यह तर्क एक कार्यवादी (व्यावसायिक) तर्क हो सकता है। उनका आशय यह भी है कि . समय के अनुसार गतिशीलता में निरंतर वृद्धि होगी।

केर तथा अन्य विद्वानों के तर्कों को गोल्डयॉर्प ने व्यापक रूप से आलोचना की है। उन्होंने अपने तर्क को सबल बनाने के लिए मिलर के अध्ययनों के साक्ष्य दिए हैं जिनमें लिपसेट और बैन्डिक्स से अधिक आँकड़े प्रस्तुत किए गए हैं। उसने दर्शाया है कि औद्योगिक समाजों की गतिशीलता की दरों में समानता की कमी है। अध्ययन बताता है कि शायद यह औद्योगीकरण ही नहीं है बल्कि इसके साथ अन्य घटक जैसे कि सांस्कृतिक घटक, शिक्षा इत्यादि भी हैं जो सामाजिक गतिशीलता प्रभावित करते हैं। गोल्डथॉर्प स्वयं अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि ये राजनैतिक तथा सैद्धांतिक मतभेद हैं जो समाजवादी और पूँजीवादी समाजों के बीच महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं जिन्हें केर तथा उनके साथी विद्वानों ने 'औद्योगिक समाज' की श्रेणी के अंतर्गत रखा है।

vH;kl 1

समरूप परिकल्पना के बारे में अन्य विद्यार्थियों और अध्यापकों से चर्चा कीजिए। इसे किस सीमा तक स्वीकार किया जा सकता है। अपने निष्कर्ष लिखिए।

यह केर तथा लिपसेट एवं बैन्डिक्स के तर्कों के बीच सतही समानता है। परंतु वास्तव में लिपसेट तथा बैन्डिक्स के तर्कों पर हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं, इनके अनुसार औद्योगीकरण के एक विशिष्ट स्तर के पश्चातं गतिशीलता दरों में वृद्धि होती है लेकिन इनमें निरंतर तथा एक–समान वृद्धि की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। हमें यहाँ पर सोराकिन के कथन को ध्यान में रखना होगा जिसमें उन्होंने न तो विशेष समय के बाद गतिशीलता में लगातार वृद्धि की और न ही गिरावट की भविष्य की है। वास्तव में वे मानते हैं कि न तो औद्योगिक समाज पूर्ण रूप से मुक्त होते हैं और न ही पूर्व–औद्योगिक समाज पूरी तरह से बंद होते हैं। वास्तव में उनका कहना है कि. यह गतिशीलता की दर का चक्रीय सिद्धांत है, जो समय–समय पर बढ़ेगा तथा घटेगा।

11-5 v/kkse[kh xfr'khyrk

अभी तक हम केवल इसपर चर्चा करते रहे हैं कि किस प्रकार परिवर्तन लोगों को ऊर्ध्व गतिशीलता की ओर ले जाते हैं। इसको परिभाषित भी किया गया है। इसी तरह के तर्क दूसरी ओर भी दिए जा सकते हैं। क्योंकि यह देखा गया है कि औद्योगीकरण के माध्यम से गतिशीलता ऊपर की ओर जाती है और उसमें वृद्धि भी करती है और इसी के कारण गतिशीलता पर्याप्त रूप से अधोमुखी भी होती है। अधोमुखी गतिशीलता इसलिए होती है कि कुछ व्यवसाय अपनी प्रतिष्ठा खो देते हैं जब उनकी स्थितियों का पुनःनिर्धारण कर दिया जाता है। इस प्रकार उन व्यवसायों को करने वाले स्वयं ही

अधोमुखी गतिशीलता को प्राप्त कर लेते हैं। फिर भी, इस तरह के बहुत सारे मामले हो सकते हैं जिनमें केवल अधोमुखी गतिशीलता ही नहीं होती अपितु बहुत–सी स्थितियाँ समाप्त हो जाती हैं। यदि ऐसी स्थितियों का प्रयोग किया जा सके तो यह मामला संचरण (अधोमुखी) गतिशीलता की अपेक्षा संरचनात्मकता (अधोमुखी) गतिशीलता का मामला होगा।

उदाहरण के लिए जब से भारत में पॉलिस्टर और अन्य कृत्रिम वस्त्रों का प्रचलन हुआ, सूती वस्त्रों की माँग में अत्यधिक कमी आ गई। इसके साथ ही, भारतीय सूत एवं कच्चे माल की भूमण्डलीय माँग में कमी आ गई। इन कारणों से भारत में कपास की खेती करने वाले अनेक किसान उजड़ गए। कपास की खेती करने वाले किसानों में से कुछ ने अन्य फसलें उगानी शुरू कर दी, कुछ लोगों ने अन्य धंधे अपना लिए। यहाँ तक कि कुछ असहाय कपास पैदा करने वाले किसानों ने आत्महत्या तक कर ली है। उदाहरण के लिए, घरेलू सामान की या घरेलू काम–धंधे में आधुनिकता और नवीन परिवर्तनों के कारण परंपरागत व्यवसायों पर। चिंतनजनक प्रभाव पड़ा है। अब वस्त्र धुलाई यानी कि धोबी के काम में अधिक लोग नहीं खपाए जा सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि धोबी के काम में मंदी इसलिए आई है कि अब घर–घर में धुलाई–मशीनें मौजूद हैं जिससे धोबी के काम में नितांत मंदी आई है। आज इस बात की चिंता नहीं है कि परंपरागत घरेलू कार्यों में कमी आई है बल्कि भारत में निम्न : जातियों से संबंधित मानव प्रतिष्ठा में अत्यंत गिरावट आई है तथा उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य महत्वहीन समझे जाते हैं और वे जो कार्य करते हैं उनके माध्यम से अपना जीवन–यापन करने में असमर्थ हैं। यदि इन लोगों के जीवन–यापन के लिए अन्य धंधों का विकल्प उपलब्ध नहीं कराया गया तो ये लोग निश्चित रूप से गरीबी की अंधी खाई में डूब जाएंगे। इसलिए यह कहा जा सकता है कि बेरोजगारी अधोमुखी गतिशीलता का प्रमुख परिणाम है।

ck/k ç'u 1

1) 'कुलीन सिद्धांत' के बारे में पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

2) सामाजिक वातावरण के महत्व को पाँच पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

....

3) समरूप परिकल्पना का आशय है –

(सही उत्तर पर टिक (✓) का निशान लगाइए)

i) निम्न गतिशीलता दर

ii) उच्च गतिशीलता दर

iii) गतिशीलता दरों में परिवर्तन का न होना।

iv) गतिशीलता दरों में वृद्धि होना।

jy lekt vkj jk"V jkT; dk tkMrh gA ble ;k=k d fy, fofHkUu çdkj d fMCc vkj Jf.k;k gkrh gA

lkHkkj% ch-fdj.keb

11-6 xfr'khyrk d vojk/kd

औद्योगीकरण द्वारा उर्ध्व गतिशीलता के अवसर प्रदान होने के विचार प्रस्तुत करने वाले विद्वानों द्वारा प्रायः इसके एक अन्य पहलू कि औद्योगीकरण गतिशीलता में एक अवरोधक का कार्य भी करता है, इसकी अनदेखी की गई है। हम पहले ही बता चुके हैं कि प्रतिभा गतिशीलता का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह भी स्पष्ट किया जा चुका है कि औद्योगिक समाज उतने खुले अथवा मुक्त नहीं हैं, जितना कि बताया जाता है। कुछ लेखकों का सुझाव है कि आज की व्यवस्थित वर्ग असमानता ने अमानता के 'विषय' (केस) का मार्ग प्रशस्त किया है। इसके साथ ही, यह विचार भी व्यक्त किया जाता है कि पूँजीवादी समाज भी अधिक दिनों तक असमानतावादी नहीं बना रह सकता। जैसा कि मार्क्स ने उसके होने की भविष्यवाणी की थी। इस प्रकार, असमानता में कमी आई है। इस विचार में अनेक शंकाएँ हैं। हो सकता है यह सिद्धांत पश्चिमी देशों में सत्य सिद्ध हो जाए किंतु भारत जैसे देश में ऐसा होना नितांत असंभव है। यहाँ बहुत ही व्यवस्थित रूप से महत्वपूर्ण वस्तुओं पर विभिन्न समूहों के दावों को नकार दिया जाता है।

यह सच है कि आज अनेक व्यवसायों में शिक्षा पद्धति के माध्यम से प्राप्त की गई औपचारिक शिक्षा के आधार पर पदों को भरा जाता है या उनमें नियुक्तियाँ की जाती हैं परंतु यह कहना गलत होगा कि सभी को शिक्षा के समान अवसर मिल जाते हैं तथा सभी शिक्षाएँ समान गुणवत्ता वाली होती हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि गतिशीलता में आने वाली कानूनी अड़चनों को तो समाप्त किया जा चुका है। किंतु समाज में जो असमानताएँ व्याप्त हैं। वे अपने आप में ही गतिशीलता के अवरोधक सिद्ध होती हैं।

11-7 ekDlokn fopkj/kkjk

इस समय मार्क्सवादी विचारधारा के संबंध में चर्चा कर लेना युक्तिसंगत रहेगा क्योंकि अनेक विवेचनात्मक विचार–बिंदु प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इसी से लिए गए हैं। स्तरीकरण तथा गतिशीलता की मार्क्सवादी विचारधारा का मूलाधार समाज की वर्ग प्रकृति पर आधारित है। इस प्रकार, इन मामलों में मार्क्सवादी विचारधारा है। मार्क्स ने

माना है कि जैसे–जैसे पूँजीवाद का विकास होता है (उन्होंने औद्योगिक समाज जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं किया है) समाज में ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती है। (इससे उनका अभिप्राय था कि स्तरीकरण व्यवस्था गुंबद जैसी होगी जिसमें अधिसंख्य आबादी निम्न स्तर पर होगी।) यहाँ तक कि मध्यवर्ती समूह जैसे कि छोटे सर्वहारा लोग, छोटे तथा इसी प्रकार के अन्य लोग समयांतर में स्वयं को अधोगति या निम्न स्तर की ओर पाएंगे। अतः यदि संपूर्ण गतिशीलता पूँजीवाद की विशेषता है तो इसका अर्थ अधोमुखी गतिशीलता थी न कि उर्ध्वगामी। इस प्रकार, ध्रुवीकरण तथा अभावग्रस्तता के परिणामस्वरूप पूँजीवादी व्यवस्था नष्ट हो जाएगी और समाजवाद की स्थापना होगी।

c,Dl 11-02

इसके बाद, मार्क्सवादी विचारधारा के लेखकों ने सर्वहारा–वर्ग सिद्धांत को विकसित। किया। उन्होंने सेवा क्षेत्र व्यवसाय में वृद्धि को दर्शाते हुए यह जानने का प्रयास किया कि क्या नीचे के स्तर के सफेदपोश वर्ग को वास्तव में सर्वहारा वर्ग में सम्मिलित किया जा सकता है और अपने निष्कर्ष में उन्होंने पाया कि इन्हें सर्वहारा वर्ग में शामिल किया जा सकता है। मुख्यतः ब्रेवरमैन तथा अन्य भी इस विचारधारा से सहमत थे, किंतु अन्य मार्क्सवादी लेखक इससे सहमत नहीं थे। मार्क्सवादी विचारधारा से भिन्न डेहंड्रोफ जैसे अन्य विद्वानों का तर्क था कि मार्क्सवादी विश्लेषण के समय से होने वाले परिवर्तनों के कारण अधिक समय तक आधुनिक समाजों को पूँजीवादी समाज नहीं कहा जाएगा। इसकी अपेक्षा इन्हें परिवर्तित पूँजीवादी समाज कहा जा सकता है।

इसलिए मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार गतिशीलता के लिए जिम्मेदार कारण मूलतः पूँजीवादी व्यवस्था में निहित हैं तथा उर्ध्व मुखी गतिशीलता के अवसरों की अपेक्षा इसमें अधोमुखी गतिशीलता ही मुख्य रूप से होती है।

11-8 0;fäijd ?kVd

इससे पहले हम विभिन्न विचारधाराओं के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करने वाले वस्तुपरक विभिन्न घटकों के बारे में चर्चा कर चुके हैं। आइए अब हम व्यक्तिपरक घटकों के संबंध में जानकारी प्राप्त करें अर्थात् वे घटक जो लोगों को गतिशीलता के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यहाँ पर हम यह स्पष्ट रूप से उर्ध्व गतिशीलता के लिए आकांक्षा वाले तत्वों की चर्चा करेंगे। अनेक मामलों में गतिशीलता अपनी इच्छा से नहीं होती जैसे कि अनेक व्यवसायों के स्तरों के नवीन स्तरीकरण में होता है। लेकिन कुछ व्यक्तियों में से एक जैसे हालातों में कोई व्यक्ति गतिशीलता के लिए प्रेरित होता है और कोई नहीं। इसलिए आइए अब हम सामाजिक गतिशीलता के कुछ व्यक्तिपरक घटकों के संबंध में जानकारी प्राप्त करें। हम यह आसानी से मान सकते हैं कि कोई भी व्यक्ति अपने स्तर से ऊपर के स्तर को प्राप्त करने की इच्छा रखता है, न कि निम्न स्तर की ओर जाने की। इस संबंध में वेबलेन की पुस्तक 'द थ्योरी ऑफ लेजयर क्लास' में कहा है कि प्रत्येक स्तरीकरण पद्धति स्वतः गतिशीलता का स्रोत तथा साधन है। यह इसलिए होता है कि किसी का भी अपने बारे में व्यक्तिगत अनुमान मुख्य रूप से अन्य लोगों के मूल्यांकन पर निर्भर होता है और कोई भी व्यक्ति अपने साथियों की दृष्टि में हमेशा अच्छे लगने वाले विचारों के अंतर्गत ही सोचेगा। अतः वे लोग ऐसी स्थितियों की अभिलाषा करेंगे जो समाज में लाभप्रद मानी

जाती हैं। इसलिए संस्कृतिकरण की प्रक्रिया वास्तव में जाति प्रथा के मूल्यों की प्रतिबद्धता को दर्शाती है जो गतिशीलता के लिए प्रेरणा या आकांक्षा का साधन होती है।

> vH;kl 2
>
> किसी प्रकार की सामाजिक गतिशीलता अपनाने वाले अपने जानकार लोगों में व्यक्तिपरक घटक जानने का प्रयास कीजिए। अपने निष्कर्षों पर अध्ययन केंद्र में अन्य विद्यार्थियों से चर्चा कीजिए।

परंतु बेटीली ने संकेत दिया है कि जब इच्छुक समूह उच्च समूह में शामिल होने का प्रयास करता है और उसमें वे शामिल भी हो जाते हैं तो वे उसी स्थिति में हमेशा के लिए बने रहना चाहते हैं। अतः जाति प्रथा के मामले में शामिल होना और उससे अलग होना दोनों प्रक्रियाएँ बराबर एक–साथ चलती रहती हैं। यह विचार वेबर के द्वारा प्रयोग किए गए सामाजिक सम्बद्धता के समान है।

परंतु अब हमें अपने मुख्य तर्क की ओर आना चाहिए। हम सामान्य रूप से यह कह सकते हैं कि मूल्यों की व्यवस्था, उनके प्रति प्रतिबद्धता दोनों ही अपने आप में गतिशीलता के लिए आकांक्षाओं को पैदा करती हैं अर्थात् गतिशीलता स्वयं ही आरंभ हो जाती है।

मर्टन ने सामाजिक व्यवहार को निर्धारित करने में लक्ष्य समूह के महत्व के संबंध में लिखा है। उन्होंने कहा है कि कोई व्यक्ति अपने स्वयं के समूह की अपेक्षा अपने लक्ष्य समूह, जिसका वह सदस्य नहीं है, की ओर गतिशील होता है। उस स्थिति में वह जो नियम अपनाता है वे उसके वर्ग से संबंधित नहीं होते। इस प्रकार, वह अपने वर्ग के नियमों से विचलित हो जाता है। उसने इस प्रक्रिया को 'पूर्वभाषित समाजीकरण' का नाम दिया है। वे लोग जो अनेक कारणों से अपने समूह की परिधि से बाहर जाते हैं वे लोग इसी प्रकार के पूर्वभाषित समाजीकरण की प्रक्रिया से गुजरते हैं। इसलिए संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को हम फिर से एक बार इस उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं जहाँ व्यक्ति ऊँची जाति की परंपराओं और उसकी जीवन–शैली का पालन करने लगता है और एक समय के बाद वह जाति के क्रम में अपने लिए ऊँची जाति की मान्यता प्राप्त करने का प्रयास करता है।

11-9 lkekftd xfr'khyrk ,oa lkekftd ifjorZu

अब तक की गई चर्चा में हमने सामाजिक गतिशीलता का विभिन्न घटकों पर आधारित होने के रूप में और सामाजिक संरचना को स्वतंत्र रूप में देखा है। तथापि मार्क्स के उपर्युक्त विचार को संक्षिप्त रूप से उल्लेख कर सकते हैं कि गतिशीलता या गतिशीलता की कमी अपने आप में व्यवस्था परिवर्तन का एक साधन है। अतः वस्तुपरक बनाम व्यक्तिपरक विशिष्ट अलग–अलग घटकों के स्थान पर हमें इसकी संरचना तथा माध्यम और परस्पर इनके। अंतःसंबंधों के रूप में देखना चाहिए। गिड्डेन्स ने गतिशीलता की परंपरागत परिचर्चाओं की आलोचना की है जो इसे निर्धारित श्रेणियों के उन वर्गों के रूप में देखती हैं जिनमें विभिन्न समयों में विभिन्न प्रकार के लोग शामिल हो सकते हैं। सकम्पटर इसे एक ऐसी बस के रूप में उद्धृत करता है जिसमें अलग–अलग श्रेणी के यात्री विभिन्न समय में यात्रा करते हैं। यहाँ पर दो

प्रकार की समस्या खड़ी होती है। पहली, कोई भी व्यक्ति गतिशीलता की चर्चा को उन घटकों से अलग नहीं कर सकता जो सामान्यतः वर्ग संबंधों की संरचना करते हैं। तथा दूसरा, गतिशीलता की पूरी प्रक्रिया स्तरीकरण की पद्धति में परिवर्तन ला सकती है।

मर्टन ने सामाजिक संरचना और इसकी भिन्नताओं के बारे में लिखा है जिसमें उन्होंने कुछ और अधिक प्रकाश डाला है। उन्होंने सामाजिक रूप से स्वीकृत लक्ष्य और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के साधनों को अलग–अलग परिभाषित किया है। ये लक्ष्य समाज के मूल्यों को दर्शाते हैं। जो लोग इन लक्ष्यों को और इनको प्राप्त करने के साधनों को स्वीकार करते हैं वे समाज का अनुसरण करने वाले होते हैं। परंतु इनमें से कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जो इन लक्ष्यों को मंजूर न करें अर्थात् जैसे मूल्यों और उसी तरह से उन्हें प्राप्त करने के साधनों को स्वीकार ही न करें। इस तरह के लोग हो सकता है सामाजिक जीवन को छोड़ दें, निवर्तनवाद, या समाज के विरुद्ध विद्रोह कर लें और बागी बन जाएँ। जैसा कि पहले बताया गया है, बागी या विद्रोही विद्यमान संरचना में प्रगति करने के स्थान पर समाज पर नई सामाजिक संरचना की अभिधारण करने लगते हैं।

मौजूदा व्यवस्था से असंतुष्ट स्थिति व्यवस्था परिवर्तन की ओर ले जाती है जिससे नई स्थितियों की उत्पत्ति होती है और इस प्रकार गतिशीलता होती है। इसलिए वस्तुपरक तथा व्यक्तिपरक घटकों को स्पष्ट रूप से अलग–अलग करना बहुत ही कठिन है। सामाजिक संरचना अपने आप ही विसंगतियों को पैदा करती है।

ck/k ç'u 2

सही उत्तर पर टिक (✓) का निशान लगाएँ–

1) पूँजीवाद में मार्क्स ने माना है :

   क) गरीबीकरण होगा।

   ख) अधोमुखी गतिशीलता होगी।

   ग) ध्रुवीकरण की तरफ झुकाव होगा।

   घ) उपर्युक्त सभी।

2) सामाजिक गतिशीलता में कुछ व्यक्तिपरक घटकों को पाँच पंक्तियों में लिखिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

11-10 lkjk'k

हमने इस चर्चा में कुछ मुख्य संरचनाओं के साथ सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करने वाले व्यक्तिपरक घटकों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इसके साथ ही,

हमने उन घटकों का विश्लेषण करने का भी प्रयास किया है जिनके कारण सामाजिक गतिशीलता होती है। इसमें हमने विभिन्न सिद्धांतों, विचारधाराओं को भी प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है जिससे विद्यार्थी अपनी विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति एवं समझ विकसित कर सके। इसके अतिरिक्त, और अध्ययन करने के लिए संदर्भ पुस्तकों की संक्षिप्त सूची उपलब्ध कराई गई है। दुर्भाग्य से भारत में गतिशीलता पर पश्चिमी विकसित देशों की तुलना में प्रमुख शोध कार्य यानी तुलनात्मक अध्ययन सामग्री उपलब्ध नहीं है। फिर भी, हमने प्रयास किया है कि विद्यार्थियों को समुचित पक्षों की विस्तृत जानकारी हो जाए।

11-11 'kCnkoyh

समरूपता : एक सिद्धांत जो पूँजीवादी प्रगति के रूप में समान औद्योगिक समाजों पर अपना प्रभाव डालता है।

जनसांख्यिकी : यह जनसंख्या से संबंधित है। इसकी वृद्धि दर तथा अनेक अन्य पहलू जैसे की जीवन प्रत्याशा।

कुलीन वर्ग : समाज का वह स्तर जो धन तथा सम्पत्ति के सभी लाभों को प्राप्त करता है।

व्यक्तिपरकता : व्यक्ति के अंतर्वैयक्तिक व्यवहारों पर निर्भर करता है।

11-12 dqN mi;ksxh iqLrdsa

गोल्ड थोर्प, जे.एच (1967), सोशल स्ट्रेटिफिकेशन इन इंडस्ट्रियल सोसाइटी, इन बैन्डिक्स –एंड लिपसेट, प्रकाशक, क्लास, स्टेट्स एण्ड पॉवर, लंदन, रोटलेज एंड केगन पॉल।

लिपसेट, सीमोर एंड बैन्डिक्स, रीनहार्ड (1959), सोशल मोबिलिटी इन इंडस्ट्रियल सोसाइटी, बरेकली, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया प्रेस।

11-10 cks/k ç'uksa ds mÙkj

cks/k ç'u 1

1) पैरेटो के अनुसार प्रतिभा और योग्यता किसी स्थिति या पद को प्राप्त करने के लिए प्रमुख कारण या तत्व है। पैरेटो ने तर्क दिया है कि यह एक स्वाभाविक श्रेष्ठता है जिससे कुलीन–तंत्र की उत्पत्ति होती है। इसमें यह भी हो सकता है कि कोई कुलीन व्यक्ति इस व्यवस्था के योग्य न होने पर अपनी विशिष्टता भी खो सकते हैं और यह भी संभव है कि किसी व्यक्ति में निम्न स्तर का होते हुए भी वह योग्यताएँ मौजूद हो सकती हैं और कुलीन स्तर में परिवर्तन हो सकता है।

2) सोरोकिन का विचार है कि सामाजिक वातावरण में परिवर्तन से जनसांख्यिकीय संबंधी घटकों तथा व्यक्तियों की प्रतिभा में परिवर्तन होता है जैसे कि जीवन–काल में परिवर्तन का होना। अतः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

वातावरण में परिवर्तन होना एक प्रमुख घटक है जिसके कारण सामाजिक गतिशीलता होती है। विभिन्न प्रकार के परिवर्तन जैसे कि आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, कानूनी, प्रौद्योगिकी यह सब गतिशीलता को विशेष रूप से प्रभावित करते हैं।

ck/k ç'u 2

1) ग

2) वेबर के अनुसार प्रत्येक स्तरीकरण की पद्धति गतिशीलता का स्रोत होती है। यह इसलिए होता है क्योंकि स्व–मूल्यांकन अन्य व्यक्ति के मूल्यांकनों पर आधारित होता है। इसके लिए व्यक्तिपरक घटक एक अच्छा उदाहरण है जो संस्कृतिकरण की प्रक्रिया है जिसमें गतिशीलता के लिए जाति प्रथा एक प्रेरक स्रोत है।

bdkbZ 12 lkL—frd rFkk lkekftd iqu:Riknu

bdkbZ dh :ijs[kk

12.0 उद्देश्य

12.1 परिचय

12.2 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन : मार्क्स्वादी परंपरा

12.3 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन : दुर्खीमियन परंपरा

12.4 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन : नृजाति प्रणाली विज्ञान संबंधी परंपरा

12.5 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन : संरचनावादी परंपरा

12.6 सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन : बूर्डियू

12.6.1 हैबिटस् तथा क्षेत्र

12.6.2 अभिरूचि, वर्ग तथा शिक्षा

12.7 सारांश

12.8 शब्दावली

12.9 अन्य उपयोगी पुस्तकें

12.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.11 संदर्भ

12-0 mís';

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप निम्नांकित बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगेः

- वर्ग तथा संस्कृति को सामाजिक स्तरीकरण के रूप में समझना।
- सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन की अवधारणा की संकल्पना करना।
- सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन की विभिन्न परंपराओं को व्याख्यायित करना।
- हैबिटस् तथा क्षेत्र के बीच द्वंद्वात्मक संबंधों की विवेचना करना।
- शिक्षा तथा सांस्कृतिक पुनरुत्पादन के मध्य अंतःसंबंधों को समझना।

12-1 ifjp;

इस खंड की पिछली इकाइयों में हमने देखा कि सामाजिक स्तरीकरण किस प्रकार धन, शक्ति तथा प्रतिष्ठा जैसे कारकों के संदर्भ में समाज को विभाजन की ओर ले जाता है। एक विशेष तबके के सदस्यों की समान पहचान, समान रुचियां तथा समान जीवन शैली होती है। विभिन्न सामाजिक समूहों के सदस्यों के रूप में वे समाज के प्रतिफल पारितोषिक के असमान वितरण का आनंद अथवा कष्ट भुगतते हैं। हमने यह

भी देखा कि किस प्रकार सामाजिक गतिशीलता का तात्पर्य किसी व्यक्ति की एक सामाजिक स्तर से दूसरे सामाजिक स्तर तक गतिविधि की परिणाम से है।

सामान्यतः पर यह माना जाता है कि पूर्व–औद्योगिक समाजों की तुलना में औद्योगिक समाजों में सामाजिक गतिशीलता काफी अधिक है। सामाजिक गतिशीलता प्रतिभा के लिए अवसर की संभावना तथा वास्तविक प्रयासों के लिए पारितोषिक भी उपलब्ध कराती है। अतः एक ओर तो यह किसी भी समाज की वर्ग संरचना को समझने के लिए महत्वपूर्ण है, वही दूसरी ओर यह भी निर्धारित करती है कि समाज कितना प्रतिभावान है। इसलिए, इस इकाई में हम इस तथ्य पर ध्यान देंगे कि सामाजिक दुनिया में सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन किस प्रकार प्रभावी वर्गों के सदस्यों को सुगम तथा प्रभावी सामाजिक गतिशीलता की ओर ले जाता है।

कई समाजशास्त्रियों ने वर्ग संरचना को एक विशेष प्रकार की वर्ग चेतना को जन्म देकर वर्ग क्रिया की दिशा में ले जाने के रूप में समझा है। वर्ग पहचान के विषय में चर्चा करने वाले अधिकांश कार्यों में सांस्कृतिक अंतर पर जोर दिया गया है। ये सांस्कृ तिक विभिन्नता स्तरीकरण प्रणाली में समूहों के बीच अभिरूचि तथा जीवन शैली में विशेष अंतर को दर्शाते हैं।

12-2 lkL—frd rFkk lkekftd iqu:Riknu% ekDlZoknh ijiijk

कार्ल मार्क्स के विचार में, मजदूरी बाजार के क्षेत्र में लोगों के बीच संबंधों की विकृत छवि उत्पन्न करती है और बनाती है। उत्पादन के साधनों के स्वामित्व तथा गैर–स्वामित्व के आधार पर मुख्य रूप से दो वर्ग उभर कर आते हैं। उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व रखने वाला एक समूह कार्य समूह (उत्पादन के साधनों के गैर–मालिक) को उनके श्रम के बदले में मजदूरी की पेशकश करता है। मार्क्स का तर्क है कि ऐसा प्रतीत होता है कि मजदूरी श्रम के बदले में उचित विनिमय का साधन है यद्यपि मूलरूप में यह श्रम शक्ति अपने उपभोक्ताओं के लिए 'अधिशेष मूल्य' पैदा कर रही है। अतः सही अर्थों में यह मजदूरी सम्बन्ध 'शोषण' का सम्बन्ध है, तथा ट्रेड यूनियन सौदेबाजी, मजदूरी वृद्धि, सेवाओं की बेहतर स्थितियों के प्रयासों के माध्यम से मजदूरी की स्थिति को बदलने के लिए जो भी प्रयास होंगे, शोषण की व्यवस्था हमेशा पुनः उत्पन्न होगी। इसलिए मार्क्स के अनुसार बाजार संस्कृति के घटकों को इस तरह पुनः पेश किया जाता है कि पुरानी व्यवस्था के अनुरूप वास्तविक संबंध बने रहते हैं तथा छिपे रहते हैं।

लुई अल्थुसर की 'इंटरपेलेशन' की अवधारणा ने सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन के माध्यम से सांस्कृतिक पहचान के उद्‌भव को विधिवत् रूप में प्रस्तुत किया। 'इंटरपेलेशन' एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों से संघर्ष करते हैं उनके साथ समावेशन करते है तथा उन्हें आत्मसात करते हैं। सत्ता के साथ किसी विशेष संबंध में किसी की स्थिति का निर्धारण संस्कृतियों के दिए गए दृष्टिकोणों की स्वीकृति या अस्वीकृति से होता है। 'इंटरपेलेशन' का सबसे प्रमुख उदाहरण विशिष्ट पुरुष तथा महिला भूमिकाएँ हो सकती है जो समाज द्वारा बहुत प्रारंभिक अवस्था से निर्दिष्ट की जाती रही हैं। हम यह स्वीकार करने के अभ्यस्त हैं कि पुरुष प्रमुख और अधिक शक्तिशाली सेक्स हैं, जबकि महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक संवेदनशील, दयालु तथा देखभाल करने वाली होती हैं। पुरुषों से अपेक्षा की जाती है

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

कि वे घर से बाहर जाएं और अपने परिवार की जीविका के लिए पैसे कमाने के लिए कड़ी मेहनत करें। वहीं दूसरी ओर महिलाओं को घर का काम करना चाहिए तथा बच्चों का पालन–पोषण करना चाहिए। इसलिए, इन उदाहरणों से हम देख सकते हैं कि किस प्रकार समाज इन विचारों को हमारे दिमाग में बिठाता है साथ ही सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन की दिशा की ओर अग्रसर करता है।

12-3 lkL—frd rFkk lkekftd iqu:Riknu% nq[khfe;u ijijk

दुर्खीम के लिए, सामाजिक तथा सांस्कृतिक पुनरूत्पादन का विषय परिवर्तन के विकृत वैचारिक मुखौटे के पीछे उनकी घटना को प्रकट नहीं करते हैं, वरन् उपयुक्त सामूहिक धर्मनिरपेक्ष विश्वास की खोज करते हैं जो परिवर्तन के समक्ष एकजुटता के साथ पुनरुत्पादन को सुनिश्चित करेगा (स्मिथ और जेनक्स 2000)। श्रम विभाजन में, दुर्खीम ने 'यांत्रिक' तथा 'जैविक' एकजुटता के रूप में आधुनिकता की निरंतरता में दो आदर्श प्रकार के एकीकरण के विषय में बात की। यांत्रिक एकजुटता में अपेक्षाकृत अविभाज्य सामाजिक संरचना होती है, कम विशेषज्ञता श्रम का बहुत कम या कोई विभाजन नहीं होता है तथा गहन सामूहिक चेतना होती है। गतिशील घनत्व यांत्रिक से जैविक एकजुटता में परिवर्तन की ओर जाता है। जैविक एकजुटता में बहुत अधिक विभेदित सामाजिक संरचना, उच्च विशेषज्ञता तथा श्रम का बहुत अधिक और परिष्कृत विभाजन है। इसके अतिरिक्त सामूहिक चेतना से दूर व्यक्तिगत चेतना के आरोहण की ओर एक गति होती है।

दुर्खीम तथा उनके अनुयायियों ने सौम्य पुनरूत्पादन के सिद्धांत का निर्माण करने का प्रयास किया। एक सिद्धांत, जो 'एनोमी' (प्रतिमानहीनता) जैसे संभावित विखंडन के समक्ष समाज को एक साथ रखता है। दुर्खीम, संबंधित मार्क्सवादियों के विपरीत, सामाजिक तथा सांस्कृतिक पुनरूत्पादन की आवश्यकता, परिवर्तन के माध्यम से अनुरूपता की आवश्यकता पर जोर दे रहा है। दुर्खीमियन परंपरा सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन को आशापूर्ण दृष्टि से देखती है। यह विभाजनकारी होने के बजाय सहमति से है और इसकी प्रेरणा परस्पर विरोधी के बजाय एकीकृत है।

12-4 lkL—frd rFkk lkekftd iqu:Riknu% u`tkfrfoKku lca/kh ijijk

नृवंशविज्ञान के अग्रदूत, गारफिंकल, दुर्खीम की तरह, ''सामाजिक तथ्यों'' को मौलिक समाजशास्त्रीय घटना मानते हैं। लेकिन गारफिंकल के ''सामाजिक तथ्य'' दुर्खीम के ''सामाजिक तथ्यों'' से बिल्कुल अलग हैं। दुर्खीम की 'सामूहिक चेतना' गारफिंकल्स की लोगों के रोजमर्रा के ज्ञान को ग्रहण करने की अवधारणा के समान है। नृवंशविज्ञानियों के लिए, सांस्कृतिक पुनरूत्पादन एक आवश्यक प्रक्रिया के साथ–साथ एक उद्देश्य भी है। गारफिंकल के शब्दों में नृवंशविज्ञान का केंद्र बिंदु इस प्रकार हैः –

नृवंशविज्ञान के लिए सामाजिक तथ्यों की वस्तुनिष्ठ वास्तविकता, प्रत्येक समाज के स्थानीय रूप से, अंतर्जात रूप से उत्पादित, स्वाभाविक रूप से संगठित, प्रतिक्रियात्मक रूप से जवाबदेह, व्यावहारिक उपलब्धि, बिना समय की परवाह के सदस्यों का काम, जहॉ चोरी की कोई संभावना न हो, छिपना, स्थगित करना, ये समस्त समाजशास्त्र की मौलिक घटनाएं है।

(गारफिंकेल 1991:11)

नृवंशविज्ञान ने विशेषज्ञ के रूप में समाजशास्त्री की भूमिका को भंग कर दिया है। इसके अनुसार, समाजशास्त्री सामान्य सदस्य के समान कौशल तथा प्रथाओं का प्रयोग करते हैं लेकिन उनके पास ऐसी प्रथाओं पर पुनः चितंन करने की क्षमता है। यह संस्कृति के पुनरुत्पादन में एजेंट के रूप में समाजशास्त्री तथा आम सदस्य दोनों की अनिवार्यताओं को दोहराता है।

12-5 lkL—frd rFkk lkekftd iqu:Rikknu% lajpukoknh ijaijk

संस्कृति के अध्ययन के लिए संरचनावाद एक प्रभावशाली परिप्रेक्ष्य है। इसकी उत्पत्ति भाषाविज्ञान में हुई है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, सामाजिक जीवन भाषा के माध्यम से निर्मित और निर्देशित होता है। फर्डिनेंड डी सॉसर (1960) ने मूल रूप से यह प्रतिपादित किया था कि सामाजिक दुनिया की किसी भी सांस्कृतिक घटना के अंतर्निहित स्वरूप को भाषाई घटना के संदर्भ में समझना होगा। सामाजिक जीवन को समझने के लिए संकेत बहुत महत्वपूर्ण पहलू हैं। संकेत तथा सांकेतक मिलकर एक चिन्ह बनाते हैं। सॉसर का मत था कि सांकेतिक और सांकेतक के बीच एक स्वेच्छित संबंध है। भाषा केवल असंबंधित संकेतकों का संग्रह नहीं है। संकेतकों के अर्थ हमेशा अन्य संकेतकों के सापेक्ष होते हैं। विशेष रूप से यहां मुख्य महत्व अंतर के संबंध से हैं, जिसमें द्विआधारी विरोध भी शामिल है। इसलिए, यहाँ एक सामाजिक दुनिया है जिसमें अर्थ, मानव तथा सामाजिक दुनिया के अन्य सभी पहलुओं को भाषा की संरचना द्वारा आकार दिया जा रहा है। सॉसर ने तर्क दिया कि एक सामाजिक तथा सांस्कृतिक घटना के रूप में भाषा एक सामाजिक समूह के सदस्यों द्वारा साझा की जाती है तथा अगली पीढ़ी को प्रेषित की जाती है, इसलिए, यह स्थिर और अपरिवर्तनीय होती है।

जहां सॉसर ने संकेतों तथा भाषा की बुनियादी संरचना को उजागर करने का प्रयास किया, जिसने संरचनावाद के विकास को प्रभावित किया, वहीं दूसरी ओर, क्लॉड लेवी–स्ट्रॉस (1964), नातेदारी प्रणालियों तथा मिथकों की समझ में संरचनावाद का उपयोग करने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने सांस्कृतिक घटना को समझने के लिए मुख्य रूप से भूगर्भीय रूपक का इस्तेमाल किया। उन्होंने तर्क दिया कि सांस्कृतिक घटना को सांस्कृतिक स्तरों की गहराई तथा उनके अंतर्संबंधों के स्वरूपो के माध्यम से समझा जा सकता है। दूसरे शब्दों में सांस्कृतिक तत्व गहरे स्तर पर अंतर्निहित प्रतिमानों की अभिव्यक्ति हैं। पूरे सामाजिक जगत में मौजूद विभिन्न नातेदारी व्यवस्था या मिथकों का विवरण बहुत भिन्न हो सकता है, लेकिन मूल संरचना एक ही है। कुल मिलाकर संरचनावाद में विशेष संस्कृति में एक संकेत का अर्थ सामान्यतः सांकेतक तथा संकेत के बीच स्वेच्छित संबंध पर नियंत्रण करने के सम्मिलन से उत्पन्न होता है। तथापि, सामाजिक दुनिया में प्रचलित ये परंपराएं संस्कृति का पुनरुत्पादन करती हैं, तथा संरचनावाद के भीतर संस्कृति पुनरूत्पादन पर निर्भर है।

cks/k ç'u 1

1) सांस्कृतिक पुनरूत्पादन से आप क्या समझते हैं ?

....

2) मार्क्सवादी परंपरा के दृष्टिकोण से सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन की अवधारणा को संक्षेप में समझाइए।

....

....

....

....

....

3) सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन पर दुर्खीम के विचारों की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

12-6 lkL—frd rFkk lkekftd iu:Riknu% cfM;

बॅूर्डियू ने संस्कृति का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रतिपादित किया। उनके विचार सामाजिक क्षेत्र में संस्कृति के महत्व को समझने के लिए शक्ति तथा अधिकार के संबंध़ पर एक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। उन्होंने शिक्षा प्रणाली पर अपने विश्लेषण का ध्यान इस बिंदु पर केंद्रित किया, कि किस प्रकार यह संस्थान वैध ज्ञान के प्रसारण तथा गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बॉर्डियू ने अपना विश्लेषण निम्नांकित स्वरूप में शुरू किया:

सांस्कृतिक क्षेत्र को क्रांतिकारी गतिविधियों के स्थान पर अनुक्रमिक पुनर्गठन द्वारा रूपांतरित किया जाता है, कुछ विषयों को सामने लाया जाता है जबकि अन्य को पूरी तरह से समाप्त किए बिना एक तरफ व्यवस्थित किया जाता है, जिससे बौद्धिक पीढ़ियों के बीच संचार की निरंतरता संभव बनी रहे। हालांकि, सभी विषयों में, एक निश्चित अवधि के विचार को सूचित करने वाले स्वरूप को पूरी तरह से केवल स्कूल प्रणाली के संदर्भ में ही समझा जा सकता है, जो अकेले उन्हें स्थापित करने तथा अभ्यास के माध्यम से उन्हें विकसित करने में सक्षम है।

(बॅूर्डियू इन यंग 1971: 192)

इस अर्थ में बॅूर्डियू इस बात पर जोर देते हैं कि संचार के रूप और पैटर्न विशेष समुदायों की विचारधारा को कैसे कायम रखते हैं। उनके अनुसार शिक्षा प्रणाली प्रमुख सामाजिक वर्गों की संस्कृति के पक्ष में पक्षपाती है। इस प्रकार, यह निम्न वर्गों के ज्ञान और कौशल की अवहेलना करता है। शिक्षा के संपर्क को संबोधित करते हुए, बॅूर्डियू (1971) का तर्क है कि शिक्षा प्रणाली की प्रमुख भूमिका सांस्कृतिक पुनरूत्पादन है। बॅूर्डियू संस्कृति के तत्वों के संचरण के संदर्भ में दुर्खीमियन ज्ञानमीमांसा से भिन्न विचार रखते हैं। दुर्खीम के लिए, हमेशा समग्र रूप से संस्कृति के तत्व का संचरण होता है, जबकि बॅूर्डियू के लिए, यह 'प्रमुख वर्गों' की संस्कृति का पुनरुत्पादन है। इन

प्रभुत्वशाली वर्गों के पास आख्यानों का निर्माण करने की शक्ति है तथा निम्न वर्गों पर अपनी विचारधारा तथा ज्ञान को अधिरोपित करने की क्षमता है। साथ ही वे ज्ञान और संचार के इस संचरण को वैध मानते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रभुत्वशाली वर्ग अपनी संस्कृति को गढ़ने तथा उसकी हिमायत करने में सक्षम होते हैं, जो कि सर्वाधिक संपन्न तथा ग्रहण करने के योग्य होती हैं। वे शैक्षिक प्रणाली में ज्ञान के आधार के रूप में अपनी संस्कृति को स्थापित करने में भी सक्षम हैं।

बॅूर्डियू का दावा करते हैं कि प्रतीकात्मक हिंसा के एकाधिकार पर संघर्ष का प्रमुख स्थल शैक्षिक प्रणाली है। प्रतीकात्मक हिंसा मुख्य रूप से सांस्कृतिक प्रक्रिया के माध्यम से की जाती है। इस प्रतीकात्मक हिंसा के माध्यम से नियंत्रण एक ऐसी संस्कृति के प्रति मानव समाजीकरण का एक स्वाभाविक तरीका बन जाता है जो व्यापक रूप से दमनकारी है। यहाँ हम बॅूर्डियू पर मार्क्सवाद का स्पष्ट प्रभाव पाते हैं। वह संरचनाओं तथा संस्थानों के दिखावे की उपस्थिति को लेकर आलोचनात्मक है तथा वह इन प्रक्रियाओं द्वारा विकृत किए गए अंतर्निहित सार तथा वास्तविक स्थितियों को गहराई से उजागर करने का प्रयास करते है। बॅूर्डियू के लिए, शिक्षा प्रणाली मौजूदा शक्ति और वर्ग संबंधों को पुनः उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बॉर्डियू के लिए संस्कृति का प्रमुख अधिकार 'सांस्कृतिक पूंजी' है। उनका दावा है कि जिनके पास सांस्कृतिक पूंजी है उनके पास शासक वर्ग की संस्कृति को पुनः उत्पन्न करने की शक्ति और साधन हैं। सांस्कृतिक पूंजी सामाजिक स्थान में विभिन्न सामाजिक स्तरों के बीच अंतर के लिए एक मानदण्ड बन जाती है। शैक्षिक प्राप्ति में वर्ग अंतर मुख्य रूप से पूरे सामाजिक ढांचे में सांस्कृतिक पूंजी के असमान वितरण के कारण हैं। शैएंक्स तथा ग्लुस्जिंस्की (2007) के अनुसार, जिन बच्चों के माता–पिता उत्तरमाध्यमिक शिक्षा प्राप्त है उनमें उच्च शिक्षा में भाग लेने की 60 प्रतिशत संभावना है, जबकि जिन बच्चों के माता–पिता के हाई स्कूल की शिक्षा की डिग्री से कम शिक्षा प्राप्त है, उनके बच्चों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने की संभावना केवल 32 प्रतिशत है।

उच्च वर्ग की पृष्ठभूमि के छात्रों को एक अंतर्निहित विशेषाधिकार के साथ–साथ अन्य लाभ भी होता है क्योंकि वे आधिपत्य की संस्कृति में सामाजीकृत होते हुये वयस्क हुये हैं। बॅूर्डियू का तर्क है कि, सभी स्कूली शिक्षा की सफलता मूल रूप से जीवन के शुरुआती वर्षों में हासिल की गई शिक्षा पर निर्भर करती है। इसलिए, स्कूलों में सफलता इन पूर्व कौशल तथा ज्ञान पर निर्भर करती है। शिक्षा कभी भी शून्य से शुरू नहीं होती है हमेशा इसकी एक पूर्व नींव होती है। प्रभावशाली वर्गों के छात्रों में समाजीकरण की प्रक्रिया इस तरह से होती है कि उन्होंने स्कूली शिक्षा के अपने प्रारंभिक वर्ष के दौरान स्वयं आवश्यक कौशल तथा ज्ञान को आत्मसात कर लिया। बॅूर्डियू के शब्दों में, उनके पास 'संदेशो की कूटभाषा होती है' जिसके माध्यम से वे कक्षा में प्रसारित संदेशों को समझने में सक्षम होते हैं। इसलिए, वर्ग की पृष्ठभूमि किसी के स्तर में ऊपर की ओर बढ़ने की संभावनाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, 30 से 40 प्रतिशत या 40 से 50 प्रतिशत की आय वर्ग में आने वाले माता–पिता से पैदा हुए बच्चों के शीर्ष 50 प्रतिशत आय अर्जित करने वालों में जाने की संभावना लगभग 50 प्रतिशत थी। दूसरी ओर, नीचे के 20 प्रतिशत आय वर्ग वाले माता–पिता के बच्चों के शीर्ष 50 प्रतिशत में जाने की केवल 38 प्रतिशत संभावना है। इसके अतिरिक्त, नीचे के 20 प्रतिशत परिवारों के 62 प्रतिशत बच्चे निचले के 50 प्रतिशत आय अर्जित करने वाले परिवारों में रहे। (क्रोक, 2010)।

अतः सांस्कृतिक पूँजी का सामाजिक समूहों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। मध्यम वर्ग के छात्र की उपसंस्कृति प्रमुख संस्कृति के करीब है, इसलिए उनके पास कामकाजी वर्ग के छात्रों की तुलना में उच्च सफलता दर की अच्छी संभावना है।

12-6-1 gfcV l rFkk {k=

बॉर्डियू (1984) ने अपने बाद के काम में हैबिट्स तथा क्षेत्र की अवधारणा के संदर्भ में अपने विचारों को विकसित किया।

हैबिट्स : यह समाज की संस्कृति तथा सामाजिक संबंधों की संरचना के बीच संबंध को समझने में मदद करता है। हैबिट्स अभ्यस्त मानसिक संरचनाएं हैं जो लोगों के कार्य को नियंत्रित करती हैं। यह एक संज्ञानात्मक संरचना है जिसके माध्यम से लोग सामाजिक क्षेत्र को समझते हैं, सोचते हैं तथा उसकी सराहना करते हैं। हैबिट्स समाज का उत्पत्ति तथा उत्पादन दोनों करता है। समाज के भीतर एक पद तथा अनुभव के दीर्घकालिक नियंत्रण के माध्यम से एक आदत विकसित की जाती है। अलग–अलग सामाजिक समूहों के समाज में अलग–अलग अनुभव तथा जीवन की संभावनाएं होती हैं, इसलिए हर समूह की आदत या हैबिट्स एक जैसा नहीं होता है। यह उस सामाजिक दुनिया में किसी की स्थिति की प्रकृति पर निर्भर करता है। वर्तमान निवास स्थान का निर्माण तथा उत्पत्ति हमेशा सामूहिक इतिहास के अंर्तगत होती हैः '' इतिहास व्यक्तिगत आदत (हैबिट्स), तथा सामूहिक प्रथाओं का उत्पादन करता है, इसलिए इतिहास, इतिहास द्वारा बनाई गई योजनाओं के अनुसार कार्य करता है''। (बौर्डियू, 1977:82)

क्षेत्र : क्षेत्र वस्तुनिष्ठ पदों के बीच संबंधों का एक समूह है। बॉर्डियू इस क्षेत्र को इस तरह से देखते हैं कि दोनों ''उन रणनीतियों को रेखांकित तथा निर्देशित करते हैं जिससे इन पदों पर रहने वाले अधिभोगी व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से, अपनी स्थिति की रक्षा या सुधार करने के लिए, तथा अपने स्वयं के उत्पादों के लिए सबसे अनुकूल पदानुक्रम के सिद्धांत को लागू करना चाहते हैं'' (बॉर्डियू, रिट्जर में उद्धृत 2011:535)। क्षेत्र प्रतिस्पर्धी लड़ाइयों का एक रणक्षेत्र है जिसमें विभिन्न प्रकार की पूंजी जैसे आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, प्रतीकात्मक को रणनीतिक रूप से उपयोग किया जाता है। एजेंटों को उनकी सामाजिक स्थिति को सुरक्षित रखने या सुधारने के लिए उपयुक्त रणनीति क्षेत्र में उनकी स्थिति पर निर्भर करती है।

बॉर्डियू हैबिटस तथा क्षेत्र के बीच के रिश्ते को दो मुख्य तरीकों से देखते हैं, ''एक तरफ, क्षेत्र हैबिटस को अनुकूलित करता है दूसरी ओर, हैबिटस क्षेत्र को एक ऐसी चीज के रूप में निर्मित करता है जो बोधगम्य है, जिसका अर्थ तथा मूल्य है, और जो ऊर्जा के निवेश के योग्य है'' (वहीः537)। इस प्रकार, हैबिटस तथा क्षेत्र के बीच एक द्वंद्वात्मक संबंध है।

बॉर्डियू के शब्दों में :

संस्कारित वास का गठन करने वाले हैबिटस मात्र बनते हैं, केवल कार्य करते हैं तथा केवल एक क्षेत्र में, एक क्षेत्र के संबंध में मान्य होते हैं..... जो अपने आप में 'संभावित शक्तियों का क्षेत्र' है, एक 'गतिशील' स्थिति है जिसमें बल केवल कुछ स्वभावों के साथ अपने संबंधों में प्रकट होते हैं। यही कारण है कि विभिन्न क्षेत्रों में, विभिन्न

विन्यासों में, एक ही क्षेत्र की एक ही प्रथा विपरीत अर्थ और मूल्य प्राप्त कर सकती है।

(बॅूर्डियू, 1984:94 जैसा कि रिट्ज़र में उद्धृत 2011:538)

बॅूर्डियू के अनुसार, संरचनात्मक अपरिवर्तनीयताओं, विशेष रूप से हैबिटस् तथा क्षेत्र के कारण, सामाजिक दुनिया में एक विशिष्ट अभिरूचि तथा जीवन शैली उत्पन्न करने की प्रवृत्ति है, जिसका परिणामतः शिक्षा से गहरा संबंध है।

12-6-2 vfHk:fp] oxl rFkk f'k{kk

अपने अनुभवजन्य अध्ययन, *"डिस्टिंक्शनः ए सोशल क्रिटिक ऑफ द जजमेंट ऑफ टेस्ट (1984)"*, में बॅूर्डियू विभिन्न सामाजिक समूहों की सौंदर्य संबंधी प्राथमिकताओं पर चर्चा करते है। इस कार्य में, बॅूर्डियू यह प्रदर्शित करने का प्रयास कर रहे हैं कि लोगों की अभिरूचि तथा जीवन शैली उनके समाजीकरण तथा शिक्षा से कैसे संबंधित हैं। उनका तर्क है कि सामाजिक उत्पत्ति के लिए सांस्कृतिक प्रथाओं तथा शैक्षिक पूंजी के मध्य बहुत ही महत्वपूर्ण संबंध है। विभिन्न सामाजिक वर्गों के अलग–अलग अभिरूचि तथा जीवन शैली होती है, साथ ही इन विभिन्न सामाजिक वर्गों में भी प्रतिष्ठा के विभिन्न स्तर होते हैं। इसलिए, सांस्कृतिक पूंजी कला, फिल्मों, संगीत तथा भोजन में अभिरूचि तथा शैक्षिक योग्यता साथ ही ज्ञान के संदर्भ में सौंदर्य संबंधी प्राथमिकताओं के विषय में विभिन्न रूप ले सकती है।

बॅूर्डियू के अनुसार, सांस्कृतिक पूंजी के विभिन्न स्तर हैं जो समाज को विभिन्न सामाजिक समूहों में विभाजित करते हैं:

1) वैध संस्कृति प्रमुख वर्गों की संस्कृति है जिसे संभ्रात वर्गो द्धारा महत्व तथाा सराहना की अनुमति दिया जाता है जो कि उच्च कला, शास्त्रीय संगीत तथा गंभीर साहित्य के रूप में जानी जाती है।

2) मिडिलब्रो कल्चर या मध्यम वर्ग की संस्कृति में प्रमुख कला रूपों की सराहना तथा समझ शामिल है, लेकिन सबसे बड़ी कलात्मक योग्यता वाले लोगों के लिए साधारण काम अधिमान्य होता है। उदाहरण के लिए, संगीत के संदर्भ में, इसमें बीथोवेन तथा मोजार्ट जैसे महान शास्त्रीय संगीतकारों के काम के स्थान पर गेर्शविन की रैप्सोडी इन ब्लू की सराहना शामिल हो सकती है।

3) लोकप्रिय अभिरूचि जनसंस्कृति या लोकप्रिय संस्कृति के समान है तथा इसमें शामिल है, उदाहरण के लिए, पॉप संगीत।

समाज में जनसामान्य परवरिश तथा शिक्षा के माध्यम से अच्छी अभिरूचि व्यक्त करना सीखते हैं। वैध अभिरूचि वाले लोग सांस्कृतिक रूप से उन्नत समूह तक आसानी से पहुंच सकते हैं। बॅूर्डियू का तर्क है कि शिक्षा प्रणाली वैध अभिरूचि के लिए उच्चतम मूल्य देती है। सांस्कृतिक पूंजी का विशेष मूल्यवान संकेतों तथा उनकी प्रस्तुति की शैलियों के रूप में संचरण शिक्षा और विभिन्न समाजीकरण रूपों का प्राथमिक कार्य है। इसलिए जो लोग वैध अभिरूचि के साथ बड़े हुए हैं उन्हें शिक्षा प्रणाली में सफल होना आसान लगता है तथा उनके लंबे समय तक बने रहने की भी संभावना है।

बॅूर्डियू का तर्क है कि शैक्षिक उपलब्धि या अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी केवल अच्छे तथा विशिष्ट अभिरूचि पर निर्भर नहीं है, लेकिन यह निश्चित रूप से मदद करती है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

lkLLrjhdj.k
dk ifjp;

उदाहरण के लिए, निजी तौर पर शिक्षित, मध्यम वर्ग के छात्रों को अक्सर प्रमुख विश्वविद्यालयों का विस्तृत ज्ञान होता था, जिसे उन्होंने परिवार और स्कूल दोनों से हासिल किया था। यह अपने छात्रों के बारे में शिक्षक की धारणाओं को भी आकार देता है। बॉर्डियू की *सांस्कृतिक अचेतनावस्था* की प्रमुख अवधारणा हैबिट्स की धारणा के साथ दृढ़ता से प्रतिध्वनित होती है। यह मौन, कल्पित तथा अनकहे आधारों को संदर्भित करता है जो किसी भी सांस्कृतिक उत्पादन की पूर्व शर्त है। इसलिए, शिक्षक अनजाने में विभिन्न अभिरूचियों को पहचान लेते हैं। वे वैध अभिरूचि के प्रति उच्च स्नेह तथा झुकाव रखते हैं। बॉर्डियू का तर्क है कि शिक्षक छात्रों को ग्रेड प्रदान करते समय शिष्टाचार और तथा शैली की अमूर्त बारीकियों से बहुत प्रभावित होते हैं। एक छात्र के सफल होने की संभावना अधिक होती है यदि उसकी शैली प्रमुख वर्ग या वैध संस्कृति के करीब हो। उनके सापेक्ष वैध संस्कृति की कमी के कारण श्रमिक वर्ग के छात्रों के परीक्षाओं में असफल होने की संभावना अधिक होती है। यह कामकाजी वर्ग के छात्रों को उच्च शिक्षा के साथ–साथ प्रमुख विश्वविद्यालयों में प्रवेश करने से बाधित करता है। अतः इस प्रकार शिक्षा व्यवस्था की प्रमुख भूमिका श्रमिक वर्ग के विद्यार्थियों को उच्च स्तर की शिक्षा से हटाना है।

बॉर्डियू के शब्दों में:

स्कूल का उपयोग करने का स्वभाव तथा उसमें सफल होने की प्रवृत्ति, जैसा कि हमने देखा है, इसका उपयोग करने के उद्देश्य अवसरों पर तथा इसमें सफल होने पर निर्भर करता है जो विभिन्न सामाजिक वर्गों से जुड़े होते हैं, ये स्वभाव तथा प्रवृत्तियां बदले में गठित होती हैं शैक्षिक अवसरों की संरचना को बनाए रखने में सबसे महत्वपूर्ण कारक शैक्षिक प्रणाली और वर्ग संबंधों की प्रणाली के बीच संबंधों के एक उद्देश्यपूर्ण रूप से समझने योग्य अभिव्यक्ति के रूप में हैं। यहां तक कि आत्म–उन्मूलन की ओर ले जाने वाले नकारात्मक स्वभाव तथा प्रवृतियां, जैसे, उदाहरण के लिए, आत्म–ह्रास, स्कूल का अवमूल्यन तथा उसका बहिष्कार तथा अनुज्ञा या विफलता या बहिष्करण की उम्मीद से इस्तीफा दे देने को उन प्रतिबंधों की अचेतन प्रत्याशा के रूप में समझा जा सकता है जो स्कूल ने उद्देश्यपूर्ण रूप से प्रभुत्व वर्गों के लिए संचय किया है।

(बॉर्डियू तथा पासरॉन 1977:204–5)

cks/k iz'u 2

1) वैध संस्कृति से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) लोकप्रिय अभिरूचियों की विशेषताओं की व्याख्या करें।

.....

.....

3) बॅूर्डियू के कार्य में हैबिटस तथा क्षेत्र की द्वंद्वात्मकता पर चर्चा करें?

.....

.....

.....

.....

.....

4) प्रतीकात्मक हिंसा को बनाये रखने में शिक्षा प्रणाली की भूमिका की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

12-7 lkjk"k

सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन का विचार एक ओर गतिशील प्रक्रिया तथा दूसरी ओर सामाजिक संरचनाओं के स्थिर पहलू का संदर्भ देता है। यह सामाजिक अनुभव में निरंतरता और परिवर्तन की आवश्यकता को पुष्ट करता है। इस इकाई में हमने मार्क्स्वादी परंपरा की दृष्टि के माध्यम से तथा दुर्खीमियन परंपरा, नृवंशविज्ञान परंपरा, संरचनावादी परंपरा और सबसे विशेष रूप से और व्यापक रूप से बॅूर्डियू के दृष्टिकोण के माध्यम से सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन के विचारों का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। बॅूर्डियू ने समुचित रूप से निष्कर्ष निकाला कि शिक्षा की मुख्य भूमिका सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरूत्पादन की संतति है, अर्थात, सामाजिक वर्गों के बीच शक्ति और विशेषाधिकार के संबंधों का पुनरुत्पादन। शैक्षिक संस्थानों में सामाजिक स्तरीकरण तथा असमानता का पुनरुत्पादन किया जाता है। शैक्षिक प्रणाली में वैध संस्कृति को पुरस्कृत तथा सराहा जाता है। एक ओर, निम्न वर्गों की वंचित स्थिति को परीक्षा में विफलता तथा आत्म–उन्मूलन द्वारा उचित ठहराया जाता है, दूसरी ओर, प्रमुख वर्गों की विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति शैक्षिक उपलब्धियों और सफलता से वैध होती है।

12-8 "kCnkoyh

lL–fr : यह लोगों के आचरण, रहन–सहन तथा जीवन जीने का तरीका है।

iqu#Riknu : सामाजिक जीवन के अनुभव के संबंध में, इस तरह के पुनरुत्पादन को प्राचीन शासन की पुष्टि होनी चाहिए।

gfcVl : हैबिटस मानसिक या संज्ञानात्मक संरचनाएं हैं जिसके माध्यम से लोग सामाजिक दुनिया से निपटते हैं।

{k= : क्षेत्र अपने भीतर वस्तुनिष्ठ स्थितियों के बीच संबंधों का एक समूह है।

vkfFkd ith : इसमें भौतिक वस्तुएं शामिल हैं– जैसे भूमि या संपत्ति, रोजगार तथा अन्य आय के स्रोत।

lkL—frd ith : इसके अंर्तगत विभिन्न प्रकार के वैध ज्ञान शामिल होते हैं।

lkekftd ith : इसमें लोगों के बीच मूल्यवान सामाजिक संबंध होते हैं।

çrhdkRed ith : यह किसी के सम्मान तथा प्रतिष्ठा से उपजा है।

lkdfrd fglk : वह हिंसा जो किसी सामाजिक प्रतिनिधि पर उसकी मिलीभगत से की जाती है।

12-9 dN mi;kxh iLrd

बॅूर्डियू, पी. (1984), *डिस्टिंक्शनः ए सोशल क्रिटिक ऑफ द जजमेंट ऑफ टेस्ट*, लंदनः रूटलेज एंड केगन पॉल।

बॅूर्डियू, पी. व पैसरोन जे0सी0 (1977), *रिप्रोडक्शन इन एजुकेशन, सोसाइटी एंड कल्चर*, लंदनः सेज।

गन्स, एच.जे. (1947), *पॉपुलर कल्चर एंड हाई कल्चर*, न्यूयॉर्कः बेसिक बुक्स।

जेनक्स, सी. (सं.) (1993), *कल्चरल रिपोडक्शन*, लंदनः रूटलेज।

12-10 ck/k ç'uk d mÙkj

ck/k ç'u 1

1) बॅूर्डियू के अनुसार, सांस्कृतिक पुनरुत्पादन वह सामाजिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी पुनः प्रस्तुत किया जाता है, विशेष रूप से प्रमुख वर्गों की संस्कृति को 'पुनः प्रस्तुत' करने में सामाजिक प्रभाव के माध्यम से शैक्षिक प्रणाली के द्धारा ।

2) मार्क्सवाद की परंपरा मुख्य रूप से इस बात पर महत्व देती है कि किस प्रकार बाजार संस्कृति के घटकों को इस तरह पुनः पेश किया जाता है कि पुराने क्रम के वास्तविक संबंध बरकरार और छिपे रहते हैं।

3) मार्क्सवादी दृष्टिकोण के विरोध में दुर्खीम हमें सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन की आवश्यकता के विषय में बताते हैं। उन्होंने उपयुक्त सामूहिक धर्मनिरपेक्ष विश्वास का प्रस्ताव रखा जो परिवर्तन की स्थिति में एकजुटता के पुनरुत्पादन को सुनिश्चित करेगा।

ck/k ç'u 2

1) यह समाज में प्रभुत्वशाली वर्गों की संस्कृति है। इसमें संगीत तथा चित्रकला जैसे क्षेत्रों में कला के कार्यों की सराहना शामिल है, जिन्हें वैध अभिरूचि की ऊंचाई माना जाता है।

2) यह संस्कृति का निम्नतम रूप है। इसमें संगीत तथा गीत शामिल हैं जो पूरी तरह से कलात्मक महत्वाकांक्षा या दिखावे से रहित हैं।

3) हैबिटस तथा क्षेत्र के बीच एक द्वंद्वात्मक संबंध है। एक ओर, क्षेत्र वास की स्थिति देता है दूसरी ओर, हैबिटस क्षेत्र को ऐसी वस्तु के रूप में निर्मित करता है जो सार्थक है, जिसमें अर्थ तथा मूल्य है, और जो ऊर्जा के निवेश के योग्य है।

4) शिक्षा प्रणाली प्रमुख संस्था है जिसके माध्यम से लोगों पर प्रतीकात्मक हिंसा की जाती है। सत्ता में विराजमान व्यक्तियों की भाषा, अर्थ, प्रतीकात्मक व्यवस्था अन्य जनसंख्या पर अधिरोपित की जाती है।

12-11 lnHkZ

अल्थुजर, एल. (1971), *'वैचारिक और दमनकारी राज्य तंत्र',* लेनिन एंड फिलॉसफी एंड अदर एसेज में, लंदनः न्यू लेफ्ट बुक्स।

बॅर्डियू, पी. (1971), *'बौद्धिक क्षेत्र और रचनात्मक परियोजना',* एम. एफ. डी. यंग (सं.) नॉलेज एंड कंट्रोल में, लंदनः कोलियर–मैकमिलन।

बॅर्डियू, पी. और पासेरॉन, जे–सी. (1977), *शिक्षा, समाज तथा संस्कृति में पुनरूत्पादन।* लंदनः सेज पब्लिकेशन।

बॅर्डियू, पी. (1977), *आउटलाइन ऑफ ए थ्योरी ऑफ प्रैक्टिस,* लंदनः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

बॅर्डियू, पी. (1984), *डिस्टिंक्शनः ए सोशल क्रिटिक ऑफ द जजमेंट ऑफ टेस्ट,* न्यूयार्कः रूटलेज।

कोरक, एम, एट अल. (2010), *''आर्थिक गतिशीलता, पारिवारिक पृष्ठभूमि, और संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में बच्चों की भलाई''* ,श्रम के अध्ययन के लिए संस्थान, शोध पत्र संख्या 4814, बॉन, जर्मनी, 8 अप्रैल, 2021 को http://ftp.iza.org/dp4814.pdf से लिया गया।

डी सौसर, एफ. (1960), *सामान्य भाषाविज्ञान में पाठ्यक्रम,* लंदनः पीटर ओवेन।

दुर्खीम, ई. (1933), *समाज में श्रम का विभाजन,* न्यूयॉर्कः फ्री प्रेस।

गारफिंकेल,एच.(1967), *नृजतिविज्ञान में अध्ययन,* एंगलवुड क्लिफ्स, न्यूयार्कः अप्रेंटिस–हॉल।

गारफिंकेल, एच. (1991), *'रिस्पेसिफिकेशनः एविडेंस फॉर लोकलली प्रोड्यूस, नेचुरली एकाउंटेबल फेनोमेना ऑफ ऑर्डर, लॉजिक, रीजन, मीनिंग, मेथड,* आदि। एसेंशियल हैसेसिटी ऑफ इममोर्टल ऑर्डिनरी सोसाइटी (आई) : एन एनांउसमेंट ऑफ स्टडीज.' जी. बटन (सं.) में, नृजातिविज्ञान तथा मानव विज्ञान। कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेसः 10–19।

lkLLrjhdj.k
dk ifjp;

लेवी–स्ट्रॉस, सी. (1964), *ट्रिस्ट टॉपिक*, लंदनः एथेनियम।

मार्क्स, के. (1970), *द जर्मन आइडियोलॉजी एंड थीसिस ऑन फ्यूअरबैक*, लंदनः लॉरेंस एंड विशार्ट।

रिट्जर, जी. (2011), *समाजशास्त्रीय सिद्धांत*, नई दिल्लीः मैकग्रा हिल एजुकेशन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड।

शैंएक्स डी.टॉमस जी. (2007), *'पार्टीसिपेशन इन पोस्टसेकंडरी एजुकेशन*, कल्चर टूरिज्म,एंड द सेंटर फॉर एजुकेशन स्टैटिक्स रिसर्च पेपर. स्टैटिक्स कनाडा ओटावा, 6अप्रैल,2021 को http://www.pisa.gc.ca/eng/participation.shtmlसे लिया गया

स्मिथ, जे. तथा जेनक्स, सी. (2000), *इमेज ऑफ कम्युनिटीः दुर्खीम, सिस्टम्स थ्योरी एंड द सोशयोलॉजी ऑफ आर्ट*, एल्डरशॉटः एवेबरी।

यंग,एम.एफ.डी.(1971), *नॉलेज एंड कंट्रोल,'*इंट्रोडक्शन',लंदनः कोलियर–मैकमिलन।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY